भारत के सात आश्चर्य

लेखकः राधाकांत भारती

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय (उच्चतर शिक्षा विभाग) भारत सरकार
Commission for Scientific and Technical Terminology
Ministry of Human Resource Development
(Department of Higher Education)
Government of India

भारत के
सात आश्चर्य

लेखक
राधाकांत भारती

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
मानव संसाधन विकास मंत्रालय
उच्चतर शिक्षा विभाग
भारत सरकार
2009

3444HRD109-IA

© भारत सरकार 2009
© Govt. of India 2009

प्रकाशक :

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग
पश्चिमी खंड 7, रामकृष्णपुरम,
नई दिल्ली 110066

प्रथम संस्करण : 2009

मूल्य	: **देश में**	:	रु.	**335.00**
	विदेश में	:	**$**	**6.74**
			£	**4.63**

विक्री का पता :

1. **वैज्ञानिक अधिकारी (विक्री)**
   वैज्ञानिक तथा शब्दावली आयोग
   पश्चमी खंड 7, रामकृष्णपुरम्
   नई दिल्ली - 110066

2. **प्रकाशन नियंत्रक**
   प्रकाशन विभाग भारत, सरकार
   सिविल लाइन्स
   नई दिल्ली- 110066

3444HRD109-IB

समन्वय तथा संपादन

प्रमुख संपादक

प्रो. के विजय कुमार

अध्यक्ष

संपादक

अशोक सेलवटकर

वैज्ञानिक अधिकारी

पुनरीक्षक

डा. एस.के. बदूनी

रीडर शहीद भगतसिंह सांध्य महाविद्यालय

दिल्ली विश्वविद्यालय दिल्ली

प्रकाशन

डा. पी. एन. शुक्ल

सहायक निदेशक

श्री आलोक वाही

कलाकार

प्रस्तावना

भारत सरकार ने विश्वविद्यालय स्तर पर शिक्षा माध्यम के रूप में हिंदी तथा अन्य भरतीय भाषाओं के विकास के लिए तत्कालीन शिक्षा मंत्रालय (अब मानव संसाधन विकास मंत्रालय) के अधीन सन् 1961 में वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग की स्थापना की थी। इस लक्ष्य को प्राप्ति के लिए आयोग अब तक लगभग 8 लाख तकनीकी शब्दों के हिंदी पर्यायों का निर्माण कर चुका है जो लगभग साठ शब्दसंग्रहों के रूप में प्रकाशित किए जा चुके है। शब्दावली के साथ-साथ अनेक परिभाषा -कोशों, चयनिकाओं, पाठमालाओं तथा विश्वविद्यालयस्तरीय हिंदी पुस्तकों का निर्माण किया गया है। वैज्ञानिक विषयों को सरल भाषा में प्रस्तुत करने की दिशा में आयोग ने अब तक अनेक पाठमालाओं का भी प्रकाशन किया है। प्रस्तुत पुस्तक इसी पाठमाला योजना की अगली कड़ी है।

पाठमालाओं के निर्माण में इस बात का पूरा ध्यान रखा गया है कि उसकी विषय-सामाग्री उपयोगी तथा अद्यतन हो और उसकी भाषा सरल बोधगम्य एवं आकर्षक हो।

प्रस्तुत पुस्तक *'भारत के सात आश्चर्य'* डा राधा कांत भारती द्वारा लिखी गई है। पुस्तक के प्रथम खंड में भारत के सात विश्वविख्यात आश्चर्यों आर्थात् भारतीय वास्तुकला की अनुपम धरोहरों का विवरण दिया गया है, और दूसरे खंड में भारत की नौ अन्यान्य गौरवपूर्ण निर्मितियों का वर्णन किया गया है। इसका पुनरीक्षण श्री एस.के. बदूनी ने किया है। पाठमाला की उपयोगिता में वृद्धि के लिए परिशिष्ट में आयोग के प्रकाशनों की सूचियां भी दे दी गई है।

आशा है कि यह पाठमाला पर्याप्त ज्ञानवर्धक सिद्ध होगी।

जनवरी 2009
नई दिल्ली

(प्रो. के विजय कुमार)
अध्यक्ष

विषय-सूची

भूमिका

भारत के सात आश्चर्य

	पृष्ठ संख्या
1. गौरवमय ज्ञान केंद्र-: नालंदा	7
2. हंपी-: विजयनगर का वैभव	12
3. श्रवणबेलगोला में बाहुबली	17
4. अमृतसर का स्वर्ण मंदिर	20
5. कोणार्क का सूर्य मंदिर	24
6. भारतीय कला वैभव को प्रतीक खजुराहो	28
7. बेमिसाल ताजमहल	36

भारत में उपलब्ध-शेष आश्चर्य

1. रामेश्वरम् मंदिर	43
2. पुरी का जगन्नाथ मंदिर	45
3. वृहदेश्वर मंदिर	47
4. पट्टदकल मंदिर	48
5. महाबलिपुरम्	49
6. महाबोधि मंदिर	51
7. कुतुब मीनार	53
8. भाखड़ा - नागल परियोजना	56
9. लोटस टेंपल (कमल मंदिर)	57

भूमिका

आश्चर्यों में आश्चर्य-हमारे सात आश्चर्य

सभ्यता के आरंभ से ही मानव में कुछ अजूबा कर दिखाने की प्रवृत्ति रही है। इसी भावना से प्रेरित होकर अनेक प्रकार के निर्माण कार्य और युगांतकारी रचनाएं पूर्ण की गई। प्राचीन काल के शेष बचे ऐसे निर्माणों को देखकर आज भी लोग आश्चर्य चकित हो जाते हैं। इन अद्‌भुत निर्माण-कार्यों का अवलोकन इतिहासकारों, नरेशों, शिल्पकारों तथा जन-साधारण द्‌वारा किया जाता रहा है। मिस्र के विशाल पिरामिड, बैबिलोन का झूलता बाग, रोम का एंफिथियेटर, चीन की लंबी दीवार आदि ऐसे स्थल हैं, जो प्राचीन काल के मानवीय श्रम तथा कला-कौशल के प्रतिमान हैं। उसी प्रकार मध्यकाल में भी मानव ने अनेक बेजोड़ निर्माण कार्यों को पूर्ण कर दिखाया है। इस क्रम में पीसा की झुकी मीनार, पनामा नहर, स्वाधीनता की प्रतिमा और भारत का ताजमहल ऐसे उदाहरण हैं, जिन्हें देख लोग आज भी आश्चर्य की अभिव्यक्ति करते हैं।

आधुनिक युग में विज्ञान और नई तकनीक से संपन्न मानव ने कई प्रकार के चमत्कारी निर्माण कार्यों को पूरा करने में अभूतपूर्व सफलता प्राप्त की है। धरती पर ऊँची से ऊँची इमारत बनाने की इच्छा लोगों में बहुत पहले से विद्‌यमान थी। प्राचीन पिरामिड, एफेल टावर, कुतुबमीनार, जिब्राल्टर का प्रकाश स्तंभ आदि उल्लेखनीय उदाहरण के रूप में हैं। वर्तमान में कई अमीर देशों ने गगनचुंबी भवनों का निर्माण कर अपनी निर्माण-कौशल क्षमता का प्रदर्शन आरंभ किया है। संयुक्त राज्य अमेरिका में न्यूयार्क स्थित एंपायर स्टेट बिल्डिंग (ऊँचाई 381 मी.) बहुत समय तक सर्वोच्च इमारत के रूप में प्रसिद्‌ध रही है, किंतु ताइवान में बनी तायीपेय इमारत आज सबसे ऊँची इमारत (ऊँचाई 509 मी.) मानी जा

रही है। लेकिन इसके मुकाबले दुबई का निर्माणाधीन होटल बुर्ज-अल-अरब 550 मी. की ऊँचाई पर पहुंच कर विश्व की सर्वोच्च इमारत बन जाएगा।

आधुनिक समय में नदियों पर विशाल बांध और लंबे तथा ऊँचे पुलों का निर्माण आधुनिक इंजीनियरी का कमाल भी दिखाया जा रहा है। अमेरिका में कोलारेडो नदी पर हुवर बांध अपने समय का सबसे ऊँचा और विशाल बांध है। उसी प्रकार लॉस एंजेल्स का गोल्डेन गेट ब्रिज भी एक अजूबा है। इसी तरह भारत में इंजीनियरों द्‌वारा निर्मित भाखड़ा नांगल बांध और हावड़ा ब्रिज की सराहना आश्चर्यजनक निर्माण कार्यों के रूप में की जाती रही है।

जन मानस में संसार के सात प्रमुख आश्चर्यों की बात प्रचलित हैं। किंतु गौर करने पर पता चलता है कि ये सात नहीं, बल्कि इक्कीस (21) हैं। सात प्राचीन काल के, सात मध्यकालीन तथा सात आधुनिक समय के आश्चर्य रहे हैं। मनोवैज्ञानिक रूप से जैसे माता अपनी संतान को सबसे अच्छा मानती है, उसी प्रकार प्रत्येक देश अपने यहां के श्रेष्ठ निर्माण कार्यों को संसार के सात आश्चर्यों में शामिल करने में प्रयास में है। दुनिया के अनेक देशों में श्रेष्ठ निर्माण को आश्चर्यजनक मनवाने की ऐसी प्रतिस्पर्धा की भावना बीसवीं सदी में खूब मुखरित हुई है। इसका एक प्रमुख कारण यात्रा की सुविधा तथा पर्यटन का विकास है। आवागमन के नए माध्यम जैसे रेल, मोटर तथा वायुयान से दूर देशों की यात्रा करके लोगों ने वहां की सभ्यता-संस्कृति का परिचय प्राप्त किया। साथ ही अनेक प्रकार के निर्माण कार्यों-देवालयों, महलों तथा स्मारकों का अवलोकन करने का आनंद लिया है। इस स्थिति में लोगों में जिज्ञासा की ऐसी प्रवृत्ति जगी कि-"सबसे अच्छा कौन है?"

सबसे अच्छा और आश्चर्यजनक कहने के लिए गंभीरतापूर्वक विचार की आवश्यकता होती है। लेकिन फिर भी संसार में अनेक ऐसे अजूबे हैं कि प्रथम दृष्टि में ही सहसा कोई व्यक्ति रोमांचित हो बोल उठता है

कि "यह कमाल की चीज है"। मिस्र के रेगिस्तानी भाग में स्थित गीजा के उत्तुंगकाय पिरामिड तथा ममी को देखकर लोग इसी प्रकार आश्चर्य चकित होते हैं। फलस्वरूप वर्षों से दुनिया के सात आश्चर्यों में इसका स्थान प्रथम रहा है। करीब पांच हजार वर्ष वहले भारी प्रस्तर खंडों को जोड़कर बनाया गया 250 मी. ऊँचा गीजा का पिरामिड वास्तव में एक समाधि (मकबरा) है जिसमें दिवंगत सम्राट का शव (ममी के रूप में) पड़ा है। इसके समीप ही पत्थर की मानव मुखाकृति वाली सिंह मूर्ति स्थित है जो निश्चत रूप में प्राचीन काल के मानव के श्रम तथा कला-कौशल का वह बेजोड़ तथा वैभवपूर्ण नमूना है, जो आज भी हवा-पानी और तेज धूप के मौसमी आघातों को सहन करता हुआ नील नदी के क्षेत्र में अडिग खड़ा है। यह अलग बात है कि इसके साथ ही ब्रिटेन के स्टोन हेज तथा रोम के क्रीड़ा स्थल (एंफिथियेटर) को महान आश्चर्यों में स्थान मिलता रहा। किंतु भारत में स्थित संसार के प्राचीनतम आवासीय नालंदा विश्वविद्यालय और कोणार्क के कलात्मक और विशालकाय सूर्य रथ की चर्चा नहीं हो सकी।

संसार के अनेक देशों में फैले मानव निर्मित ऐतिहासिक धरोहरों के महत्व को रेखांकित करने तथा उनकी सुरक्षा के लिए इक्कीसवीं सदी के आरंभ में, इतिहासकारों, कलाकारों तथा वैज्ञानिकों ने एक आंदोलन की शुरूआत की। सात अजूबों की पुरानी सूची-(1) मिस्र का पिरामिड, (2) बैबीलोन का लटकता उद्यान, (3) चीन की दीवार, (4) पीसा की मीनार, (5) अलेक्जेंड्रिया का प्रकाश स्तंभ, (6) रोम का एंफिथियेटर, (7) ब्रिटेन के स्टोन हेज, पर पुनः विचार कर तालिका तैयार करने के लिए फिल्म निर्माता बर्नाड बेबर ने इतिहासकारों तथा वैज्ञानिकों के साथ मिलकर नए सिरे से गौर करना आरंभ किया। पुर्तगाल की राजधानी लिस्बन में इसका मुख्यालय बना और निर्णय लिया गया कि संसार के साथ महान आश्चर्यों की सूची तैयार करने के लिए लोगों से वोट लेना ही उचित रहेगा। दुनिया भर के सुधी लोगों से 7 जुलाई 2007 अर्थात्

सात, सात और सात को प्राप्त मतों के आधार पर नई तालिका तैयार की गई। इस संदर्भ में उल्लेखनीय है कि प्राचीनता और रहस्यमय कारणों के आधार इस समिति ने मिस्र के पिरामिड को पहले ही सर्वश्रेष्ठ आश्चर्य की मान्यता प्रदान कर दी थी। वोटों के आधार पर लिस्बन में इन महान सात आश्चर्यों का चयन किया गया-

1-भारत का ताजमहल, 2-जोर्डान के पेट्रो मंदिरों के अवशेष, 3-पेरू में माचू पिचू-प्राचीन नगर के अवशेष, 4-चीन की महान दीवार, 5-मैक्सिको में मय संस्कृति का अवशेष -चे चिन इत्जा, 6-ब्राजील की पहाड़ी पर करुणामय ईसा मसीह की भव्य प्रतिमा, तथा 7-इटली में स्थित प्राचीन क्रीड़ा भवन-एंफिथियेटर।

संसार को सात महान आश्चर्यों के चयन की तर्ज पर भारत में भी बुद्धिजीवियों-विशेषकर इतिहासकार, लेखक, पत्रकार तथा पुरातत्व विशेषज्ञों ने सामान्य मतदान द्वारा सात प्रमुख आश्चर्यजनक सांस्कृतिक केंद्रों का चयन किया है। भारत के चुने गए इन महान सात आश्चर्यों को देखने से पता चलता है कि इनमें कला और मानव श्रम से निर्मित ऐसे महान निर्माण कार्य हैं, जो सामान्य मानव को सुखी जीवन शिक्षा और अध्यात्म की ओर प्रेरित करते हैं। इस प्रसंग में ध्यान देने योग्य बात है कि भारत में चयन किए गए इन सात आश्चर्यों के अलावा इनके समकक्ष अन्य इक्कीस (21) निर्माण अथवा ध्वंसावशेष विद्यमान हैं। किंतु जिन सात को सर्वाधिक मत मिले उनको भारत के सात आश्चर्यों का संबोधन मिला है, ये हैं: 1-ताज महल, 2-स्वर्ण मंदिर, 3-श्रवण बेल गोला में बाहुबली प्रतिमा, 4-हम्पी विजयनगर, 5-नालंदा, 6-कोणार्क और 7-खजुराहो के मंदिर।

भारत के घोषित उपर्युक्त सात आश्चर्यों के अलावा बोधगया का महाबोधि मंदिर, दिल्ली में कुतुबमीनार और कमल मंदिर, रामेश्वरम और मदुरै के भव्य मंदिर, सागर तट स्थित महाबलिपुरम्, कोलकाता का हावड़ा ब्रिज और विक्टोरिया मेमोरियल, अजंता और एलोरा की गुफाएँ,

चित्तौड़गढ़ का विजय स्तंभ और जोधपुर तथा जैसलमेर के किले भी अपनी विशेषता में किसी से कम नहीं हैं।

भारत के प्रमुख सात महान आश्चर्यों में निश्चित रूप से गौरवपूर्ण ताजमहल श्रेष्ठ है, क्योंकि यह केवल भारत का ही नहीं अपितु संसार की श्रेष्ठ धरोहर तथा सात आश्चर्यों में प्रतिष्ठित है। उत्तर प्रदेश के आगरा शहर में स्थित सफेद संगमरमर से बनी यह आलीशान इमारत मुगल बादशाह शाहजहां के दांपत्य प्रेम का चिरंतन प्रतीक है। भारत में आने वाले पर्यटकों की यह पहली पसंद है। मुगल बादशाह मे अपनी दूसरी पत्नी मुमताज महल की याद में सन् 1831 में यमुना तट पर इस खूबसूरत मकबरे का निर्माण कराया था।

भारत की ज्ञान गरिमा के प्रसिद्ध प्रतीक के रूप में नालंदा विश्वविद्यालय के अवशेष आज भी जग प्रसिद्ध हैं। वर्तमान में विकसित तथा संपन्न कहे जाने वाले देश के लोग जब जंगलों में भटकते हुए अंधकारपूर्ण जीवन व्यतीत कर रहे थे उस समय के भारत में अनेक विद्या केंद्र विकसित हो चुके थे, जिनमें प्रमुख था-नालंदा विश्वविद्यालय। मध्य बिहार में स्थित इस महान विद्यापीठ की स्थापना ईसवी वर्ष 414 में मगध के सम्राट कुमारगुप्त ने शिक्षा और अनुसंधान कार्य के लिए कराई थी।

भारत के दर्शनीय स्थलों में अमृतसर का स्वर्ण मंदिर महत्वपूर्ण है। स्वर्ण मंदिर का निर्माण अमृत सरोवर के मध्य में पत्थर से बने चौकोर आधार पर किया गया है। मंदिर की दीवारों को चांदी, तांबे, संगमरमर और लकड़ी की नक्काशी से सजाया गया है। बाद में अपने राज्यकाल में पंजाब के महाराजा रणजीत सिह ने मंदिर के ऊपरी भाग को तांबे और सोने के पत्तरों से शोभामंडित कराया। इस प्रकार यह गुरुद्वारा स्वर्णिम आभा बिखेरने लगा और स्वर्ण मंदिर के नाम से मशहूर हो गया।

आंध्र प्रदेश में भव्य निर्माण कला के गौरवपूर्ण अवशेष बिखरे पड़े हैं - मुख्यतः तुंगभद्रा नदी के तट पर। मध्य कालीन युग में विजयनगर

साम्राज्य के राजाओं के कुलदेवता महादेव विरूपाक्ष मंदिर तथा राजभवन तत्कालीन वास्तुकला के उत्तम उदाहरण हैं। सन् 1565 में तालिकोटा युद्ध के भयंकर विध्वंस के बाद भी मंदिर को अधिक नुकसान नहीं पहुंचा और ये आज भी कलात्मक प्रतीक के रूप में अडिग खड़े हैं।

भारत में कोणार्क मंदिर अभूतपूर्व है जो ब्लैक पैगोडा के रूप में भी मशहूर है। उड़ीसा में सागर के निकट चंद्रभागा नदी के तट पर अविचल खड़ा कोणार्क - भारतीय सभ्यता, संस्कृति तथा शिल्पकला का अभूतपूर्व प्रतिमान है। करीब हजार साल पहले निर्मित कोणार्क मंदिर जहां-तहां से टूट रहा है, किंतु इसकी विशालता, कला-सौष्ठव तथा शिल्प वैविध्य देखकर विश्व के प्रसिद्ध वास्तुशिल्पी भी आश्चर्य चकित रह जाते हैं।

मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में स्थित हैं खजुराहो समुदाय के अनेक मंदिर। ये अपने शैव, वैष्णव तथा जैन मंदिरों तथा सजीव से दिखाई पड़ने वाली यक्ष तथा अप्सराओं की मैथुनरत प्रतिमाओं के लिए भी प्रसिद्ध हैं। पूजा स्थल के रूप में निर्मित देवालयों की दीवारों पर विभिन्न भावमुद्राओं में बनी नग्न मूर्तियों का रहस्य दर्शकों को अब भी उलझन में डाल देता है।

भारत में महान आश्चर्यो के संबोधन से प्रतिष्ठित ये सात सांस्कृतिक प्रतिष्ठान और अवशेष भारत की शिल्पकला तथा निर्माण सौष्ठव के गरिमामय प्रमाण हैं। उल्लेखनीय है कि प्राचीन स्मारकों के कलात्मक अवशेष तथा वर्तमान निर्माण को प्रत्यक्ष देखकर ही कोई व्यक्ति इनके गौरव तथा महत्ता को सरलता से समझ सकता है। महान आश्चर्यों की इस गौरवगाथा के साथ ही अंततोगत्वा यह गान याद आता है-

यह प्यारा भारत देश हमारा
दुनिया में है सब से न्यारा!

56, नगिन लेक, अपार्टमेंट, आउटर रिंग रोड,
पीरागढ़ी, नई दिल्ली।

राधाकांत भारती

गौरवमय ज्ञानकेंद्रः नालंदा

भारत का गौरवमय ज्ञान केंद्रः नालंदा

आधुनिक संसार के संपन्न और सुसभ्य कहलाने वाले देशों के लोग जब कई वर्ष पहले जंगलों में भटकते हुए अंधकारपूर्ण जीवन जी रहे थे, उस समय भारत में उच्चकोटि के सांस्कृतिक केंद्र और विद्यापीठ विकसित हो चुके थे। प्राचीन भारत के अनेक प्रतिष्ठित केंद्रों में से प्रमुख रहा है - नालंदा विश्वविद्यालय। सन् 414 ईस्वी के लगभग मगध साम्राज्य के सम्राट कुमारगुप्त ने शिक्षा प्रचार और विभिन्न विद्याओं के विकास के लिए नालंदा में विश्वविद्यालय की स्थापना की गई थी। ऐसे लिखित प्रमाण मिलते हैं कि तथागत बुद्ध के जीवनकाल में भी नालंदा एक सांस्कृतिक केंद्र था। किंतु उनके समय में विश्वविद्यालय की स्थापना नहीं हुई थी।

नालंदा का विश्वविद्यालय और उसके एक महान सांस्कृतिक केंद्र के रूप में प्रामाणिक विवरण चीनी यात्री हुएनसांग के यात्रा विवरणों में प्राप्त होता है। इसी जिज्ञासु विद्वान चीनी यात्री ने तत्कालीन भारत में कई वर्षो तक अनेक नगरों तथा सांस्कृतिक केंद्रों की यात्राएं की थी। कन्नौज के सम्राट हर्षवर्धन के दरबार में महीनों तक रहकर हुएनसांग ने संस्कृत तथा पाली भाषाओं की जानकारी प्राप्त की, फिर वैशाली तथा बोधगया होते हुए नालंदा पहुंचा। करीब 635 ईसवी के आस पास वह नालंदा में अध्ययन करता रहा। फिर पांच वर्षो के बाद वह पुनः वहां आया और दो-तीन वर्ष रहकर उसने वैदिक साहित्य तथा बौद्ध धर्मग्रंथों

का अध्ययन तथा अनुवाद किया। उसके वृत्तांत के अनुसार नालंदा में विशालकाय विश्वविद्यालय परिसर था, जिसमें पांच संघाराम थे। एक नए संघाराम का निर्माण कार्य सम्राट् हर्षवर्धन की ओर से किया जा रहा था। सभी संघाराम एक ऊँची दीवार से घिरे थे। इनके मध्य में विद्यापीठ स्थित था। ऊँची दीवारों से सटे आठ आयाताकार प्रकोष्ठ थे, जिनमें कक्षाएं लगती थी और आचार्यों के व्याख्यान होते थे। दूसरी ओर कई वेधाशालाएं और कार्यशालाओं के भवन थे जिनमें तरह-तरह के यंत्र लगे थे। उनसे जलवायु के अलावा ग्रह-नक्षत्रों की जानकारी प्राप्त की जाती थी। अलग चार मंजिला छात्रावास का भवन था, जिसमें पांच हजार से अधिक छात्रों के निवास की व्यवस्था थी।

चित्र 1. नालंदा विश्वविद्यालय के ध्वंसावशेष

चित्र 2. नालंदा के खंडहर

ऐसा अनुमान है कि तत्कालीन नालंदा विश्वविद्यालय में 1500 से अधिक विद्वान, आचार्य और प्राचार्य थे, जो वेद-पुराण और बौद्ध दर्शन के अलावा गणित, ज्योतिष, आयुर्वेद, चिकित्सा विज्ञान, न्याय दर्शन, चित्रकला आदि विभिन्न विषयों की शिक्षा देते थे। उस समय में विश्वविद्यालय के प्रधानाचार्य उद्भट विद्वान शीलभद्र थे। उन्हें सोलह भाषाओं का ज्ञान था और वे अनेक विधाओं के पारंगत आचार्य थे। गौरवमय नालंदा विश्वविद्यालय ने अनेक ऐसे दार्शनिकों को प्रशिक्षित किया, जो आज भी महिमामांडित हैं। इन विद्वानों में अश्वघोष, नागार्जुन, प्रभाकर मित्र, असंग शीलभद्र, राहुल शीलभद्र, पद्मसंभव, वसुबंधु आदि उल्लेखनीय हैं।

इस विशाल विश्वविद्यालय में रहने वाले आचार्यो, विद्यार्थियों तथा कर्मचारियों की संख्या दस हजार से ऊपर थी। उनके लिए मगध सम्राट ने रहने और भोजन की विशेष व्यवस्था की थी। वहाँ की व्यय-व्यवस्था नालंदा के चारों ओर स्थित एक सौ गांवों की आय से की जाती थी। हुएनसांग के बाद एक दूसरा चीनी यात्री ईत्सिंग भी नालंदा आया था। उसने नालंदा में ही रहकर शिक्षा और विशेषज्ञता प्राप्त की थी। उसने नालंदा विश्वविद्यालय में स्थित प्रमुख पुस्तकालयों का विशेष रूप से उल्लेख किया है। तीन मुख्य पुस्तकालय; रत्नसागर, रत्नोदधि और रत्नरंजा थे। इनमें सबसे बड़ा पुस्तकालय रत्नोदधि था, जिसका विस्तार नौ खंडों में था। इन खंडों में अगणित बहुमूल्य ग्रंथ और पांडुलिपियां सिलसिलेवार रखी हुई थी। पुस्तकाध्यक्ष कोई वरिष्ठ प्राचार्य होता था। इन पुस्तकालयों में पांडुलिपियां तथा प्रतिलिपियां तैयार करने में अनेक भिक्षु तथा छात्र कार्यरत रहते थे। हुएनसांग ने नालंदा में रहकर करीब सात सौ ग्रंथों की प्रतिलिपियां तैयार की और इन्हें बहुमूल्य धरोहर मानकर अपने देश चीन ले गया। उसी परंपरा में ईत्सिंग ने भी प्रतिलिपि-लेखन का कार्य किया और वैदिक तथा बौद्ध साहित्य के चार सौ ग्रंथों की प्रति सहेज कर चीन ले गया।

प्रत्येक उत्कर्ष के पीछे उसका पराभव छिपा रहता है। संपूर्ण संसार में ज्ञान की प्रखर ज्योति फैलाने वाले इस विद्या केंद्र का भी अचानक पतन हुआ। वर्ष 1200 ईस्वी में मुहम्मद बख्तियार खिलजी ने वर्तमान बिहार राज्य पर आक्रमण किया और राजधानी पटना के अलावा कई मंदिरों, मठों और बौध विहारों को ध्वस्त कर दिया। उसी अभियान में नालंदा महाविहार और विश्वविद्यालय को आक्रमणकारी ने बुरी तरह से तोड़-फोड़ दिया। यही नहीं, मूर्तिपूजा के विरोधी उसके सैनिकों ने पुस्तकालय को भी नहीं छोड़ा। उन्होंने पुस्तकालय में आग लगा दी, जिससे महीनों तक वहां की पुस्तकें और पांडुलिपियां धू-धू कर जलती रहीं। काल का क्रूर चक्र कभी उत्थान तो कभी पतन करता रहता है।

इसी क्रम में प्रायः पुर्नर्निमाण की स्थिति भी आती है। प्राचीन नालंदा विश्वविद्यालय के विध्वंस के सैकड़ों साल बाद विख्यात पुरातत्ववेत्ता सर कनिंगघम ने इस प्राचीन विद्यापीठ के स्थल को खोज विकाला और प्रकांड इतिहासकार पं. हीरानंद शास्त्री के अथक प्रयास से नालंदा के प्राचीन ध्वंसावशेषों की खुदाई कर सन् 1916 में बाहर निकाला गया। यही नालंदा के खंडहर के नाम से मशहूर हुआ।

स्वतंत्रता-प्राप्ति के बाद केंद्र तथा राज्य सरकार का ध्यान इस एतिहासिक धरोहर की ओर गया है। वर्ष 1951 में नव नालंदा महाविहार की स्थापना की गई जिसमें बौद्ध दर्शन और पाली भाषा तथा साहित्य पर अनुसंधान कार्य आरंभ किया गया। बाद में जापान, चीन, श्रीलंका और इंडोनेशिया ने भी इस संस्थान के विकास में यथोचित योगदान दिया। नव नालंदा महाविहार को विश्वविद्यालय के समकक्ष संस्थान की मान्यता प्रदान की गई है। वहाँ भारत सरकार ने विशाल भवन तथा सुंदर संग्रहालय का निर्माण किया है।

नालंदा अब प्राचीन विश्वविद्यालय का ध्वंसावशेष मात्र नहीं है, बल्कि एक सुंदर पर्यटन केंद्र भी है। वहाँ देशी और विदेशी पर्यटकों की भीड़ लगने लगी है। राजधानी पटना से करीब 110 किलोमीटर पर स्थित नालंदा एक दर्शनीय स्थल के रूप में विकसित हो गया है।

अब बिहार सरकार के प्रयास से यहां विश्वस्तरीय विद्य केंद्र का विकास किया जा रहा है।

कैसे पहुँचे, कहाँ ठहरे-

नालंदा बिहार स्थित स्थल बिहार राज्य की राजधानी पटना से करीब 60 किलोमीटर दूर स्थित है। पटना से रेल तथा सड़क मार्ग द्वारा वहां पहुंचा जा सकता है। नालंदा विःवि के अवशेष के पास ही नव नालंदा महाबिहार में गेस्ट हाउस है। इसके अलावा नालंदा जिला मुख्यालय बिहार शरीफ में अनेक होटल और धर्मशाला उपलब्ध हैं।

हंपीः विजयनगर का वैभव

विजयनगर का वैभव - हंपी

आंध्र प्रदेश में होसपेट के निकट तुंगभद्रा के तट पर बिखरे पड़े हैं विजयनगर के वैभवपूर्ण और कलात्मक राजधानी के अवशेष जिसे अब हंपी कहते हैं। यही विजयनगर साम्राज्य के राजाओं के कुलदेवता महादेव शिव का विशाल देवालय है, जो विरूपाक्ष मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है। यह आश्चर्य की बात है कि सन् 1565 में तालिकोटा के युद्ध में भयंकर विध्वंस के बाद भी इस मंदिर को नुकसान नहीं हुआ। और आज भी वह मंदिर कलात्मक निर्माण के प्रतीक के रूप में विद्यमान है।

विजय नगर साम्राज्य का उत्थान और पतन

महान संत और दार्शनिक माधव विद्यारण्य की प्रेरणा से संगमा के बहादुर पुत्रों हरिहर और बुक्का के द्वारा सन् 1336 में विजयनगर साम्राज्य की स्थापना हुई थी। इस नए साम्राज्य का महामंत्री भी गुरु माधव को ही बनाया गया था जिसकी प्रशासनिक कुशलता से इस साम्राज्य का विकास संभव हुआ।

संगमा राजवंश के क्रमशः नौ सम्राटों के बाद राज्य की बागडोर सलुवा राजवंश के नरसिम्हा सलुवा ने संभाली। वीर नरसिम्हा बहादुर तथा कुशल शासक था। इसके बाद उसके सौतेले भाई कृष्णदेव राय ने सिंहासन ग्रहण किया। कृष्णदेव राय ने विजयनगर साम्राज्य को विकसित कर इसे चरमोत्कर्ष पर पहूँचाया। कृष्णदेव राय कुशल, विद्यवान और धार्मिक प्रवृत्ति के सम्राट् थे। जिनकी मृत्यु के बाद उसके सौतेले भाई अच्युत रायँ को गद्दी मिली। फिर उसी वंश के वेंकट प्रथम और बाद में सदाशिव राय को राज्य का भार मिला। किंतु सदाशिव राय के

चित्र 3. विरूपाक्ष मंदिर, हंपी

राज्यकाल में उसके प्रधानमंत्री राम राय ने पूरी शक्ति हासिल कर ली। वह घमंडी बन गया और पड़ोसी राज्यों को भी परेशान करता रहता था। फलस्वरूप बीजापुर, गोलकुंडा, अहमदनगर और बीदर के मुस्लिम राजाओं ने मिलकर विजयनगर पर भारी आक्रमण किया। सन् 1665 में तालिकोटा के युद्ध में विजयनगर की सेना पराजित हुई और राम राय को निजामशाह ने मार डाला। इस प्रकार विजयनगर साम्राज्य की पराजय हुई और इसके बाद आक्रमणकारियों ने राजधानी हंपी को ध्वस्त करने का कार्य किया।

विरूपाक्ष मंदिर के पूर्वी प्रवेश द्वार पर विशाल गोपुरम है। नौ मंजिलों में विभाजित इस कलात्मक गोपुरम की ऊँचाई पचास मीटर से अधिक है, इसमें देवी-देवताओं तथा विभिन्न पशु-पक्षियों की सुंदर मूर्तियां बनी हैं। इसके आगे काठ के बने दो कलापूर्ण रथों के दर्शन होते हैं। मुख्य मंदिर के आगे विशाल आंगन है, जहां पर नहर में तुंगभद्रा का जल लाया गया है। मंदिर के सभामंडप से आगे द्वार पार करने पर विरूपाक्ष शिवलिंग के दर्शन होते हैं। विरूपाक्ष के उत्तरी खंड में भुवनेश्वरी देवी की मूर्ति तथा पश्चिम में पार्वती जी की प्रतिमा है, इसके समीप ही गणेश जी तथा नवग्रह पूजन की व्यवस्था है।

मंदिर के पश्चिम वाले भाग में पीछे की ओर दो आंगन हैं। पहले आंगन में एक मंडप में स्वामी विद्यारण्य (श्री माधवाचार्य) की समाधि है तथा पूजा के लिए माधवाचार्य की प्रतिमा बनी है। विरूपाक्ष मंदिर के पिछले हिस्से में बाहर निकलने का द्वार है-जिसके आगे के सरोवर में शिव मंदिर है। विरूपाक्ष मंदिर से थोड़ी दूरी पर एक ऊँचे मंडप में श्री गणेश जी की भव्य मूर्ति स्थित है। इसकी ऊँचाई बारह हाथ से अधिक है लेकिन इस विशाल प्रतिमा की सूँड का कुछ भाग टूटा हुआ है। एक ही प्रस्तर खंड से निर्मित विनायक की इतनी बड़ी प्रतिमा अन्यत्र नहीं है।

बड़े गणेश जी से कुछ दूरी पर दक्षिण की ओर छोटे मंडप में छोटे गणेश जी की मूर्ति है। यह कलात्मक मूर्ति उचित अवस्था में है। इस

संदर्भ में एक उल्लेखनीय तथ्य है कि हंपी नगर दक्षिण के वैभवशाली साम्राज्य विजयनगर की राजधानी थी। पड़ोस के कई मुसलमानी रियासतों की सम्मिलित फौजों ने चढ़ाई करके इस राजधानी को ध्वस्त किया, विशेषकर मूर्तिभंजकों ने पूजनीय प्रतिमाओं को तोड़ने का काम किया। फिर भी विभिन्न मंदिरों के अंदर प्रतिष्ठित अनेक प्रतिमाएं शेष बच गई, जो मूर्ति कला की बहुमूल्य निधि हैं।

विजयनगर साम्राज्य की वैभवपूर्ण राजधानी हंपी में सुंदर राजमहल, सभाभवन, देवालय तथा सरोवरों के अलावा भावमुद्रा में बनी कई मूर्तियां थीं। आक्रमणकारियों ने विजय प्राप्त करने पर इस राजनगरी को लूटा और निर्दयतापूर्वक तोड़-फोड़ की, किंतु पत्थरों से निर्मित अनेक देवालय तथा प्रतिमाएं जो आज तक शेष हैं उन कलात्मक उपलब्धियों की मूक प्रमाण हैं।

हंपी के विरूपाक्ष मंदिर के अलावा इसके आसपास कई अन्य दर्शनीय मंदिर तथा सरोवर और मंडप हैं। इनमें तुंगभद्रा के पास चक्रतीर्थ, मतंग पर्वत पर श्रीराम मंदिर, दक्षिण-पश्चिम की ओर स्थित नरसिंह मंदिर उल्लेखनीय हैं।

यहां से पूर्व की ओर विट्ठलस्वामी का विशाल मंदिर है। बहुत बड़े घेरे में स्थित इस मंदिर के गर्भ गृह में मुख्य प्रतिमा अब मौजूद नहीं है, लेकिन दीवारों तथा स्तंभों पर की गई कारीगरी को देख कर प्रत्येक दर्शक आश्चर्यचकित हो जाता है।

हंपी को अब विश्व धरोहर के रूप में मान्यता मिली है और यह भारत के सात आश्चर्यो में से एक है। यूनेस्को के विशेषज्ञों ने हंपी के वर्तमान अवशेषों को देखकर आश्चर्यजनक अभिव्यक्ति प्रस्तुत की है:

"विजयनगर साम्राज्य की राजधानी के रूप में निर्मित हंपी की कलात्मकता अनुपम है। राजमहल, सभाभवन, देवालय तथा विभिन्न मुद्राओं में सजीव दिखने वाली प्रस्तर प्रतिमाएं सभी दर्शकों को भाव विभोर कर देती हैं।

यह आश्चर्य तथा खेद की बात है कि तीन सौ साल की कालावधि में निर्मित इस कलात्मक और आकर्षक राजधानी को आक्रमणकारियों ने कुछ महीनों में ही लूट-खसोट कर खंडहर बना डाला। फिर भी, तुंगभद्रा नदी के तट पर बिखरे ये अवशेष उत्कृष्ट कलात्मक कथा के मूक प्रतीक बन कर खड़े हैं।"

कैसे जाएं-कहां ठहरें

दक्षिण भारत में हुबली-विजयवाड़ा रेल लाइन पर बेलारी के पास हॉसपेट रेलवे स्टेशन है। हॉसपेट अच्छा शहर है, जहां होटल तथा धर्मशालाएं हैं। यहां से कार और बसों से हंपी पहुंचा जा सकता है। विजयवाड़ा तक हवाई सेवा तो है, ही साथ ही अच्छी सड़कें भी हैं। अक्टूबर से जनवरी तक का समय भ्रमण के लिए उत्तम है।

श्रवणबेलगोला में बाहुबली

श्रवणबेलगोला में बाहुबली प्रतिमा

दक्षिण भारत के कर्नाटक राज्य में हासन से पश्चिम में श्रवणबेलगोला नामक स्थान है। मोटरकार द्वारा हासन से यहां 4 घंटे में पहुंचा जा सकता है। इस जगह चंद्रगिरि और विंध्यगिरि नामक दो पहाड़ियों हैं। इन दोनों के बीच में एक सरोवर है। इसका नाम बेलगोला अर्थात् श्वेत सरोवर था जैन श्रवणों के रहने के कारण ही इसका नाम श्रवणबेलगोला पड़ गया। यह दिगंबर जैनियों का महान तीर्थस्थान है। पहाड़ी के ऊपर चौदह प्राचीन जैन मंदिर है, जिनमें मूर्तियां भी विराजमान हैं।

दूसरी ओर विंध्यगिरि पर गोमटेश्वर बाहुबलि की विशालकाय प्रतिमा है। इस विशाल मूर्ति का निर्माण केवल एक पत्थर से किया गया है। एक ही पत्थर से निर्मित इतनी विशाल और सुंदर प्रतिमा संसार में अन्यत्र नहीं है। ऊँचाई 57 फुट से अधिक है। एक हजार वर्ष पूर्व गंगवंश के सेनापति और मंत्री चामुंड राय ने इस दिगंबर मूर्ति की स्थापना की थी। सैकड़ों वर्षों से धूप, हवा तथा वर्षा की बौछारों को सहन करने के बाद भी इस भव्य प्रतिमा की सुंदरता कम नहीं हुई है।

श्रवणबेलगोला के दूसरी ओर चंद्रगिरि पहाड़ी है और यह विंध्यगिरि से छोटी है। एक साधारण मार्ग से आगे ऊपर चढ़ने के लिए सीढ़ियां हैं. इस पहाड़ी पर हरे-भरे पेड़ पौधे हैं तथा एक घेरे के भीतर कई जैन मंदिर हैं। एक गुफा में स्वामी भद्रबाहु के चरण-चिह्न हैं। इसके अलावा शिखर पर कई मुनियों के चरण-चिह्न तथा कलात्मक प्रतिमाएं हैं, जिनकी पूजा-अर्चना की जाती है।

गोमटेश्वर में स्थापित बाहुबली की यह विशालकाय प्रतिमा अपनी कलात्मकता में बेजोड़ है। प्रसिद्ध शिल्पकार युसुफ अरकल ने इसकी तारीफ करते हुए कहा है कि - "भारतीय शिल्पकारों ने पुरानी परंपरा से हट कर इस विशाल मानव आकृति का निर्माण कर अभूतपूर्व कौशल का प्रतिमान प्रस्तुत किया है।"

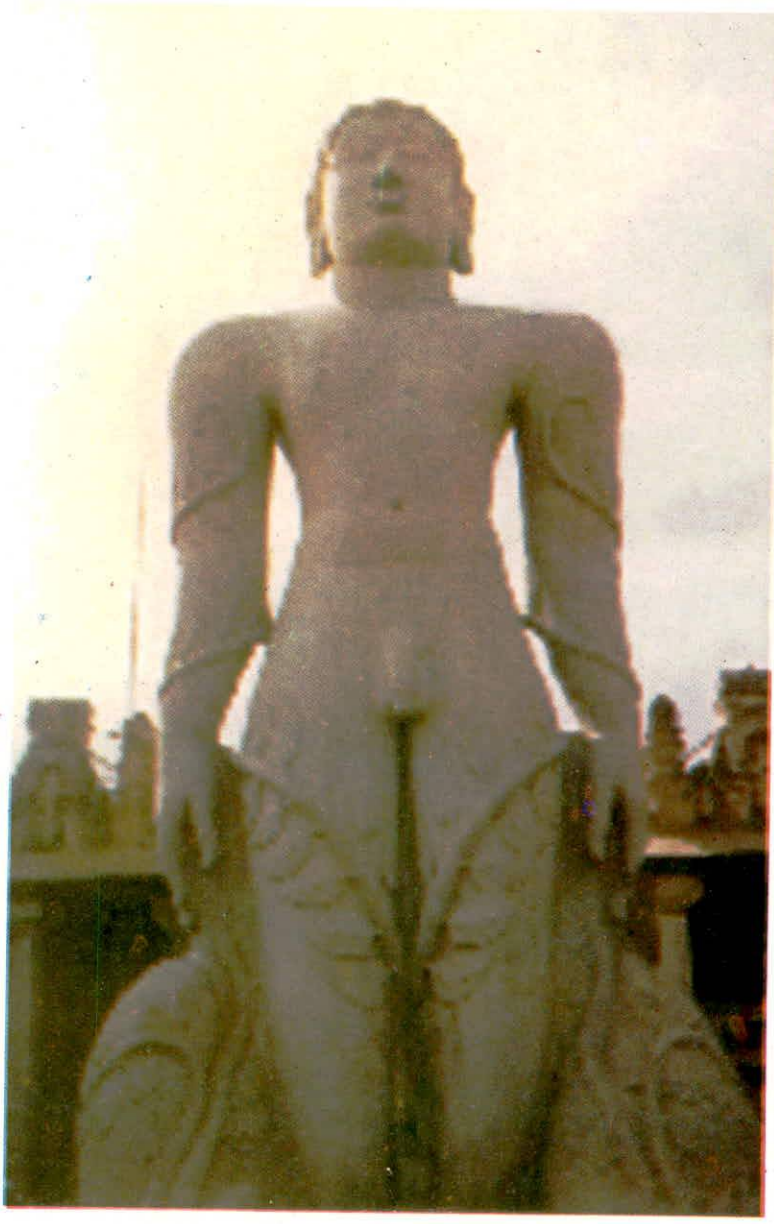

चित्र 4. बाहुबली की प्रतिमा, श्रवणबेलगोला

कैसे पहुंचे, कहां ठहरें

श्रवण बेलगोला में बाहुबलि प्रतिमा तक पहुंचने के लिए कई सुविधाजनक रास्ते मौजूद हैं। कर्नाटक प्रदेश की राजधानी बेंगलूर तक हवाई मार्ग, रेल लाइन अथवा सड़कों द्वारा पहुंचा जा सकता हैं। बेंगलूर से यह स्थान सवा सौ किलोमीटर तथा हासन रेलवे स्टेशन से सड़क मार्ग द्वारा चालीस कि.मी. के करीब है।।

गोमटेश्वर तीर्थ के नाम से मशहूर इस स्थल पर कई धर्मशालाओं के अलावा अच्छे और सस्ते होटल और लॉज मौजूद हैं जहां यात्रियों के ठहरने तथा सवारी की सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती हैं। •

अमृतसर का स्वर्ण मंदिर

अमृतसर का स्वर्ण मंदिर (हर मंदिर साहब)

स्वर्ण मंदिर पंजाब के खूबसूरत नगर अमृतसर में स्थित है सिखों का परमपूज्य गुरुद्वारा जो हर मंदिर साहब के नाम से प्रसिद्ध है। केवल भारत ही नहीं, अपितु संसार के कोने-से सिख और हिंदू भक्तजन यहाँ माथा टेकने आते हैं। एक सुंदर सरोवर के बीच में स्थित इस गुरुद्वारे को श्रद्धालुओं ने खूब सजाकर रखा है। ऐसे प्रमाण मिलते हैं कि आरंभ में यहाँ पर छोटा सा तालाब था, जिसके जल में चर्म रोग को ठीक करने की अद्भुत शक्ति थी। बहुत पहले सिख गुरु अर्जुन देव ने यहाँ डेरा डाला तथा अपने आशीर्वाद और वहाँ स्थित सरोवर के जल से लोगों के दुःख दूर किए। बाद में लाहौर तथा निकटवर्ती इलाकों से लोग वहाँ पहुँचने लगे और इस सरोवर की लोकप्रियता बढ़ने लगी। इस तरह इस सरोवर का नाम अमृत सरोवर हो गया और साथ में बस रही बस्ती का नाम अमृतसर पड़ गया।

अमृत के समान पवित्र तथा स्वच्छ जल से भरे सरोवर के बीच में गुरुद्वारे के निर्माण कार्य की कथा भी बहुत रोचक है। इसे केवल मजदूरों और कारीगरों के द्वारा ही नहीं बनाया गया, अपितु यहाँ आने वाले छोटे-बड़े सभी भक्तजनों ने सेवाभाव से कठिन परिश्रम कर हर मंदिर साहब का निर्माण किया। भक्तों की इस सेवा भावना के बदले उन्हें

गुरु का अशीर्वाद मिलता रहा तथा एक छोटी बस्ती से विकसित होता हुआ अमृतसर एक विशाल नगर बन गया।

हर मंदिर साहब, जो अब स्वर्ण मंदिर के नाम से प्रसिद्ध है, गुरु अर्जुन देव की प्रेरणा से सत्रहवीं सदी में बनाया गया था। इस गुरुद्वारे का निर्माण सरोवर के किनारे नहीं, बल्कि मध्य भाग में पत्थर से बने चौकोर आकार में किया गया है। हर मंदिर में प्रवेश के लिए परंपरा से अलग हटकर एक ही नहीं बल्कि चारों दिशाओं में प्रवेश द्वार बनाए गए हैं। इससे यह बात प्रमाणित होती हे कि मंदिर किसी एक समुदाय के लिए नहीं अपितु श्रद्धा रखने वाले सब लोगों के लिए खुला है। अतः चारों दिशाओं से लोग सकते हैं। दो मंजिलों वाले इस मंदिर में विशाल गुंबद है। मंदिर की दीवारों को काठ, तांबे, चाँदी और संगमरमर पर मीनाकारी से सजाया गया है। बाद में पंजाब के महाराजा रणजीत सिंह ने हर मंदिर साहब के ऊपरी भाग को तांबे और सोने के पत्तरों से सजवाया। इस

चित्र 5. स्वर्ण मंदिर, अमृतसर

तरह यह गुरुद्वारा स्वर्णिम आभा बिखेरने लगा जिससे इसका लोकप्रिय नाम स्वर्ण मंदिर हो गया।

मंदिर के मध्य भाग में गुरु अर्जुन देव द्वारा संकलित वाणियों का आदि ग्रंथ रखा हुआ है। रत्नों से जड़ित सोने के सजे हुए सिंहासन पर रखे इस आदि ग्रंथ का सस्वर पाठ वहाँ के ग्रंथी किया करते हैं। सुबह और शाम गुरु ग्रंथ साहेब के पाठ की आवाज दूर-दूर तक गूंजती रहती है।

सरोवर के बीच में स्थित हर मंदिर के निर्माण-कार्य में कई बाधाएं भी आती रहीं। सत्रहवीं सदी के मध्य में अफगानिस्तान से आए आक्रमणकारियों ने मंदिर की दीवारों को तोड़ डाला था। जिसे बाद में सरदार जस्सा सिंह अहलूवालिया ने सामूहिक श्रमदान द्वारा गुरुद्वारे का निर्माण कार्य तेजी से आरंभ किया और सरोवर में स्वच्छ जल भरने के लिए हिमालय से निकली ब्यास नदी से संपर्क नहर का निर्माण किया। यह कार्य सन 1776 में पूरा किया गया यह भी कहा जाता है कि अफगन अहमद शाह जब काफी सामान लूट कर वापस जा रहा था तो अमृतसर और लाहौर के बहादुर सरदारों ने कीमती लकड़ी से निर्मित दरवाजा छीन लिया। उन लोगों ने उस दरवाजे को हर मंदिर के मुख्य प्रवेश द्वार पर स्थापित कर दिया, जो आज दर्शनी ड्योढ़ी के नाम से मशहूर है।

सिखों की इस अनुपम तीर्थ नगरी की लोकप्रियता प्रति वर्ष बढ़ती जाती है। अब अमृतसर का स्वर्ण मंदिर भारत के प्रमुख पर्यटन केंद्रों में से एक है। इक्कीसवीं सदी के आरंभ में भारत के सात आश्चर्यों में दर्शनीय स्वर्ण मंदिर को दूसरा स्थान प्राप्त हुआ है। उल्लेखनीय है कि अमृतसर स्थित हर मंदिर या गुरुद्वारे में किसी धर्म, किसी संप्रदाय या किसी वर्ग के व्यक्तियों के लिए प्रवेश वर्जित नहीं है। लेकिन गुद्वारों में प्रचलित नियमों के अनुसार यहां पगड़ी बांध कर अथवा सिर ढक कर प्रार्थना की जाती है।

कैसे पहुँचें, कहाँ ठहरें

अमृतसर पंजाब का प्रमुख नगर तथा उत्तर रेलवे का जंक्शन है। यहाँ राजधानी दिल्ली, राजस्थान तथा देश के विभिन्न भागों से सीधी रेल सेवा उपलब्ध है। यहाँ हवाई अड्डा भी है, जहाँ वायुयान से पहुँचा जा सकता है। यह स्थान लाहौर दिल्ली तथा चंडीगढ़ से पक्की सड़कों से जुड़ा है। अमृतसर में कई अच्छे होटल, सराय और धर्मशालाएं हैं। इनके अतिरिक्त गुरुद्वारे में भी ठहरने और भोजन की व्यवस्था है। •

कोणार्क का सूर्य मंदिर

कोणार्क का दर्शनीय सूर्य मंदिर

सूर्य रथ के रूप में निर्मित उड़ीसा के सागर तट के समीप स्थित कोणार्क मंदिर भारतीय संस्कृति, स्थापत्य कला तथा आस्था का बेजोड़ प्रतीक है। विश्व धरोहर के रूप में प्रतिष्ठित कोणार्क अपने कलात्मक सौंदर्य और विशालता के कारण एक महत्वपूर्ण पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित हो चुका है।

बारहवीं सदी के दौरान गंगवंश के राजा नरसिंह देव के शासन में हजार से अधिक शिल्पकारों तथा श्रमिकों के द्वारा इस विशाल मंदिर के निर्माण से संबंधित अनेक प्रकार की किंवदंतियां प्रचलित हैं। ऐसी मान्यता है कि राजा श्रीकृष्ण के पुत्र सांबा को युवावस्था में कुष्ठ रोग हो गया। किसी संत ने रोग से छुटकारा पाने के लिए उस सागर जल के साथ सूर्य उपासना की विधि बताई। इस अभ्यास से उसका रोग दूर हो गया और तब उसके पुत्र ने सूर्य के प्रति आस्था अभिव्यक्त करने के लिए इस विशाल मंदिर का निर्माण कराया था।

काले तथा भूरे रंग के ग्रेनाइट पत्थरों से निर्मित इस विशाल मंदिर की परिकल्पना सूर्य रथ के रूप में की गई थी। चौबीस चक्कों पर स्थित इस रथ को सात अश्वों के द्वारा खींचा जा रहा है, जिस पर सूर्य भगवान विराजमान हैं। कहा जाता है कि आस्थावान शिल्पकारों ने मंदिर के गर्भगृह में गोलाकार रूप में सूर्य मूर्ति को बिना किसी आधार के चुंबकीय आकर्षण से लटका रखा था। किंतु कालक्रम से टूट कर यह क्षत-विक्षत हो गिर पड़ा, जिसका अवशेष लंदन के संग्रहालय में रखा है।

मूर्तिभंजक आक्रमणकारियों के अलावा इस कलात्मक निर्माण को सागर की लवणयुक्त हवा तथा पानी ने भी काफी नुकसान पहुंचाया है। कोणार्क मंदिर परिसर के निकट से प्रवाहित नदी धारा चंद्रभागा से भी

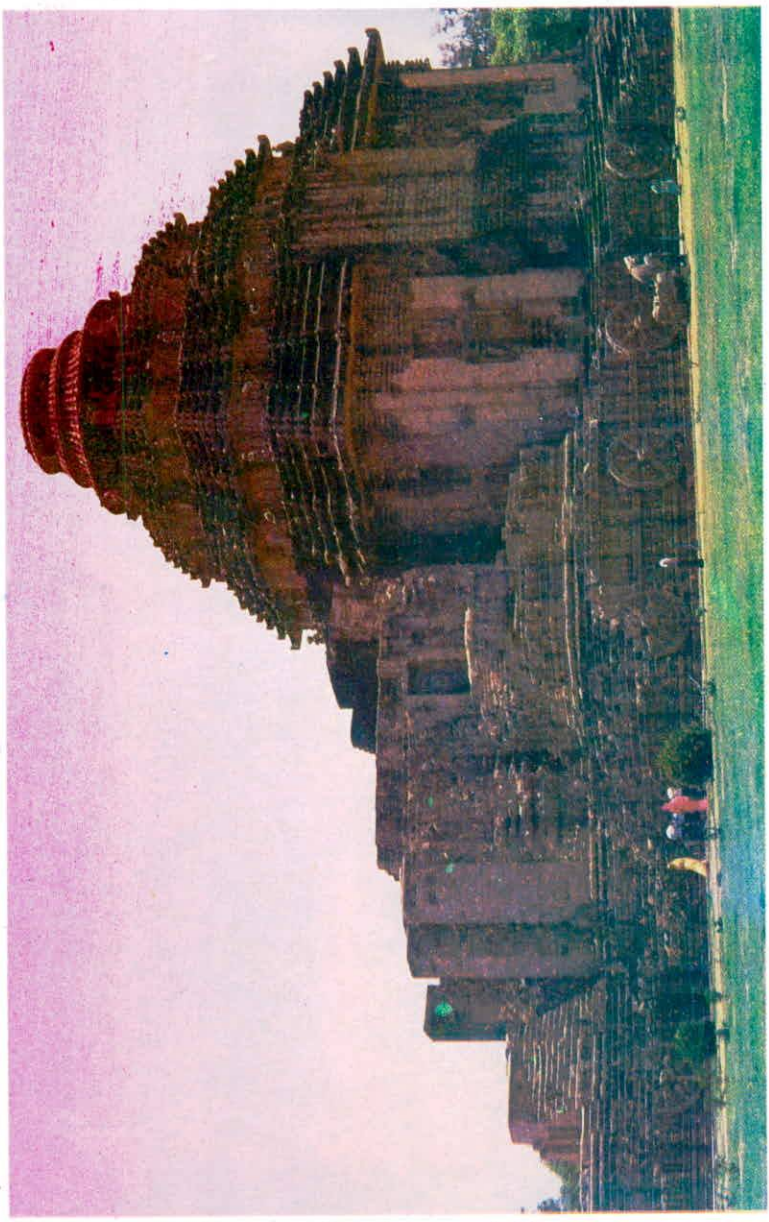

चित्र 6. कोणार्क का सूर्यमंदिर

मिट्टी का कटाव होता रहा है। प्रमुख मंदिर का शिखर (विमान) टूट कर अलग हो चुका है। मंदिर का प्रमुख द्वार पूरब दिशा में है। प्रवेश द्वार से अंदर आते ही विशाल नट-मंदिर (नाट्यशाला) है, जिसकी दीवारों पर कलिंग शैली में अनेक कलात्मक प्रतिमाएं निर्मित हैं। इसके बाद गर्भगृह में प्रवेश के पहले जगमोहन है, जिसकी छतें टूट गई हैं। यहां भी दीवारों पर सुंदर और कलात्मक मूर्तियां हैं। भारतीय पुरातत्व विभाग ने और इंजीनियरों ने मुख्य मंदिर को महत्वपूर्ण धरोहर के रूप मे सुरक्षित रखने के लिए मुख्य मंदिर के दरवाजे को बंद करे लोहे की छड़ों से बांध रखा है। कोणार्क मंदिर से टूटे प्रस्तर खंडों को भी निकट में एक संग्रहालय में रखा गया है।

कोणार्क मंदिर की दीवारों तथा प्रस्तर खंडों पर अनेक प्रकार की कलापूर्ण मूर्तियां निर्मित हैं। कलिंग शैली में बनाई गई कई प्रतिमाएं मैथुनरत मुद्रा में हैं, जो खजुराहो की शिल्पकला से समानता रखती हैं। यहां गायकों, कलाकारों, सैनिकों तथा नायिकाओं की मूर्तियां इस प्रकार से बनाई गई हैं कि कोई भी दर्शक देखकर चकित हो जाता है। यहां हाथी, अश्व, सुअर तथा अन्य कई प्रकार के पशु-पक्षियों को भी दर्शाया गया है, जिन्हें देखकर अधिक जानकारी प्राप्त करने की प्रेरणा मिलती है। भगवान सूर्य के इस विशाल रथ को खींचने के लिए जिन अश्व-प्रतिमाओं को बनाया गया है - उन्हें देख कर ऐसा प्रतीत होता है कि मानो वे अभी चलायमान हो जाएंगे।

कैसे पहुँचे, कहाँ ठहरें

भारत के सात आश्चर्यजनक धरोहरों में से एक कोणार्क मंदिर पहुंचने के लिए अनेक रास्ते हैं। कोलकता, विशाखापटनम रेल लाइन पर उड़ीसा की राजधानी भुवनेश्वर है। यहां हवाई अड्डा भी है और दिल्ली-पुरी रेल लाइन का जंक्शन है। भुवनेश्वर और पुरी से कोणार्क मंदिर तक पक्की सड़क है, जहां एक घंटे में बस अथवा मोटर कार द्वारा पहुंचा जा सकता है। कोणार्क को भारत तथा राज्य सरकार के द्वारा एक महत्वपूर्ण पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित किया जा रहा है।

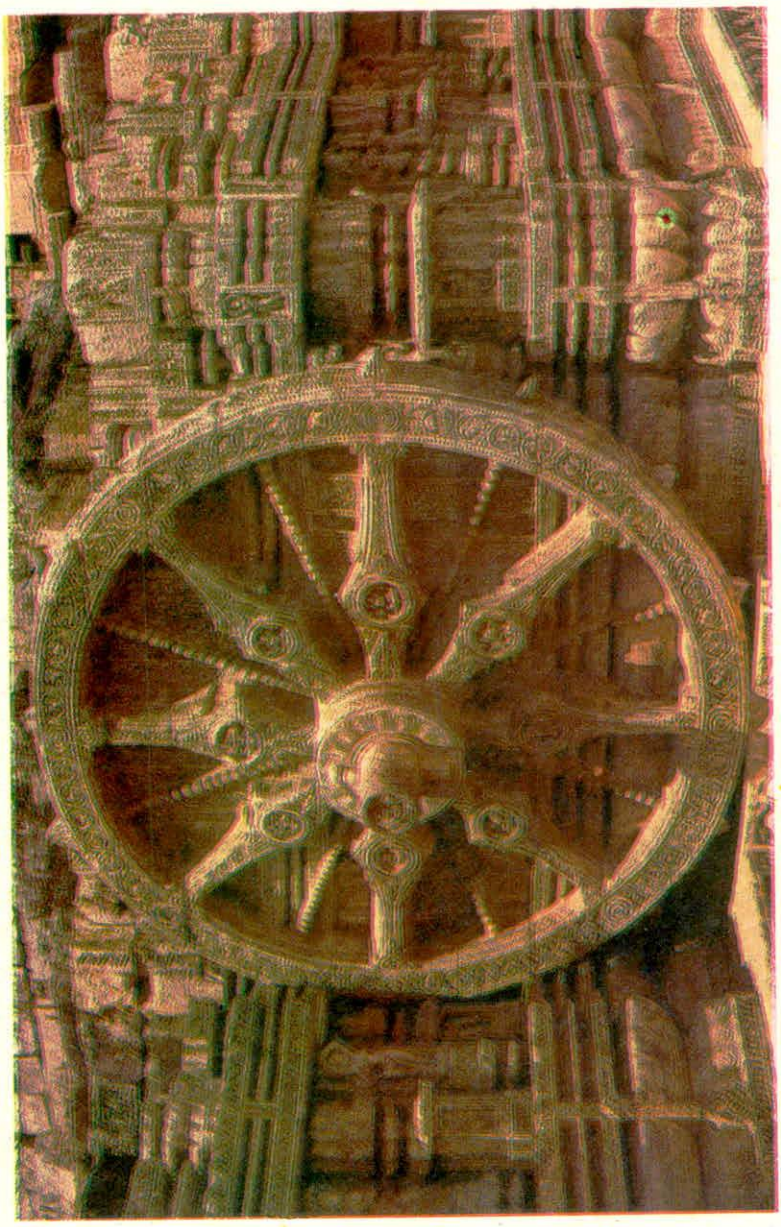

चित्र 7. चक्र, सूर्यमंदिर, कोणार्क

भारतीय कलावैभव का प्रतीक खजुराहो

भारतीय कलावैभव का प्रतीक : खजुराहो

भारत के कलात्मक मंदिरों में श्रेष्ठ कहलाने वाले खजुराहो के मंदिर मध्य प्रदेश के छतरपुर इलाके में स्थित है। महोबा के चंदेलवंशी राजाओं के शासन-काल में इन मंदिरों का निर्माण हुआ था। दसवीं सदी में सत्तासीन होने वाले ये चंदेलवंशी अपनी वीरता के साथ ही सुशासन तथा कलात्मक निर्माणों के लिए भी प्रसिद्ध रहे हैं। लगभग तीन सौ साल के शासन-काल में इन्होंने देवी-देवताओं के अनेक भव्य मंदिरों का निर्माण कराया। उपलब्ध अभिलेखों के आधार पर ऐसा अनुमान लगाया जाता है कि खजुराहो समूह के मंदिरों का निर्माण ग्यारहवीं सदी के समय हुआ था। मंदिरों के शिल्प तथा वास्तुकला को देखकर कई इतिहासकार इसे गुजराती स्थापत्य कला का नमूना मानते हैं। इस संदर्भ में उल्लेखनीय है कि डॉ. गौरीशंकर ओझा के अनुसार "खजुराहो के मंदिरों का निर्माण गुजरात के सौराष्ट्र से आए सोमपुरा समुदाय के शिल्पियों द्वारा किया गया है। ये लोग सुप्रसिद्ध मंदिर सोमनाथ के इलाके के मूल निवासी थे। लेकिन सन् 1026 ई. में महमद गज़नवी के आक्रमणों से परेशान होकर इस क्षेत्र में भाग आए। इनको यहां राजाश्रय भी मिला और मंदिर निर्माण का मौका भी।" इतिहासकार के इस कथन की पुष्टि डूंगरपुर के पास देव सोमनाथ मंदिर के देखने से होती है, जिसका निर्माण गुजरात की प्रसिद्ध नागर शैली में किया गया है।

खजूर और करील के कंटीले वृक्षों वाले छतरपुर के इस इलाके में मूलतः छोटे-बड़े अस्सी (80) मंदिर थे जिनमें अब केवल बाइस(22) उचित स्थिति में विद्यमान हैं। इन मंदिरों के साथ यह भी आश्चर्यजनक

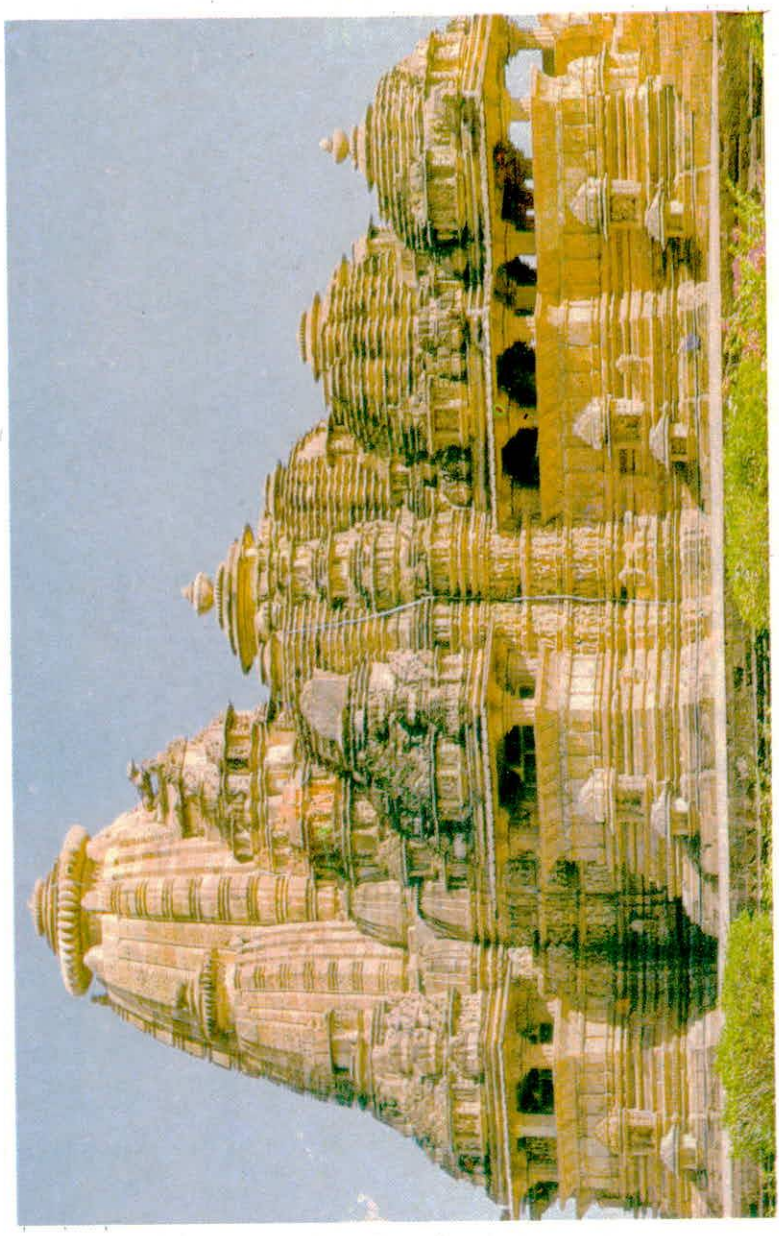

चित्र 8. विश्वनाथ मंदिर, खजुराहो

तथ्य जुड़ा है कि ये मंदिर किसी एक संप्रदाय के नहीं हैं। इनमें शैव, बैष्णव तथा जैन मंदिरों को एक समान प्रतिष्ठा दी गई है जो निर्माण कर्ताओं के 'सर्वधर्म समभाव' की श्रेष्ठ भावना का परिचायक है। खजुराहो के कतिपय मंदिरों में दर्शकों को आश्चर्य चकित करने वाली कामकला में रत नर-नारियों की अनेक प्रतिएं मिलती हैं।

मंदिर की दीवारों पर रति-रंग में लिप्त प्रतिमाओं को किस उद्देश्य से उभारा गया है, यह बात अब तक उलझनपूर्ण है। कुछ इतिहासकारों का अनुमान है कि मैथुन रत प्रतिमाओं को मंदिरों की दीवारों पर प्रदर्शित कर वे इंद्र देवता को आकर्षित करके भारी वर्षा और बज्रपात से रक्षा करना चाहते थे। अन्य स्थानों पर इतिहासकारों का मत है कि चंदेल राजवंश तंत्र-साधना में विश्वास रखता था। और ऐसी मैथुनरत युगल मूर्तियां उसी के प्रभाव स्वरूप निर्मित की गई है। एक अधिक स्वीकृत मत के अनुसार भारत के मध्यकालीन समय में बौद्ध धर्म का उत्कर्ष हुआ था। बड़ी संख्या में लोगों ने बुद्धत्व को अपना लिया था ऐसी स्थिति में हिंदुओं के आचार्यो ने जन समुदाय विशेषकर युवा वर्ग को मंदिरों की ओर आकर्षित करने तथा गृहस्थ जीवन की सीख देने के लिए मंदिरों में मैथुनरत प्रतिमाओं का निर्माण कराया, जिसका बौद्ध धर्म में पूर्णतः निषेध है। मंदिरों में कामक्रीड़ा रत इन मूर्तियों की स्थिति होने के प्रश्न का सही उत्तर भले ही न मिले, किंतु स्थापत्य तथा शिल्पकला के उदाहरण के रूप में खजुराहो के मंदिर निश्चित रूप में अभूतपूर्व माने जाते है। इसी आधार पर यूनेस्को ने इसे विश्व की श्रेष्ठ सांस्कृतिक धरोहर की मान्यता प्रदान की है।

खजुराहो समूह के मंदिरों को शैव, वैष्णव तथा जैन के वर्गो में विभक्त किया जाता है। लेकिन मुख्य वर्ग, पश्चिम तथा पूरबी समूह के रूप में कटिबद्ध किए गए हैं। यहां का प्रमुख शैव मंदिर–कंदरिया महादेव पश्चिमी समूह में है। इसी के साथ वैष्णव देवालय लक्ष्मण मंदिर है। जबकि सबसे विशाल जैन मंदिर पार्श्वनाथ पूर्वी समूह में स्थित है।

आरंभिक काल में निर्मित खजुराहो के मंदिर दानेदार ग्रेनाइट पत्थर के है, जबकि पश्चिमी समूह के अधिसंख्यक मंदिरों का निर्माण पीले तथा

चित्र 9. उत्कीर्ण फलक, लक्ष्मण मंदिर, खजुराहो

गुलाबी बलुआ पत्थरों से किया गया, जिसे निकट के पन्ना की पहाड़ियों से लाया गया था।

पश्चिमी समूह के मंदिरों में कंदरिया महादेव चंदेल शिल्पकला का श्रेष्ठ प्रतीक है। करीब बत्तीस (32) मीटर ऊँचे इस शिवालय के मध्य में ज्योतिर्लिंग प्रतिष्ठित है।मंदिर की छत तथा दीवारों पर अनेक देवी-देवताओं की सुसज्जित और सुंदर प्रतिमाएं हैं। मंदिर के प्रवेश द्वार पर सुडौल तथा नक्काशी वाले स्तंभ हैं। मेहराबयुक्त प्रवेश द्वार के बाद बरामदे तथा सुंदर प्रकोष्ठ से होकर मंदिर के केंद्र स्थल पर जाया जाता है। कंदरिया महादेव मंदिर के अंदर तथा बाहर की दीवारों पर अनेक आकर्षक प्रतिमाएं हैं, जिन्हें देखकर कोई भी कला पारखी मुग्ध हो जाता है।

चौंसठ योगिनी के नाम से प्रसिद्ध मंदिर खजुराहो के सबसे पुराने मंदिरों में से एक है। देवी महाकाली को समर्पित इस जीर्ण मंदिर में चौसठ (64) तोरणों में विभिन्न मुद्राओं में चौसठ प्रतिमाएं प्रतिष्ठित हैं, जो शाक्त साधना की प्रतीक हैं।

यहां से थोड़ी दूरी पर अलग से लक्ष्मण मंदिर है, जो तत्कालीन वास्तुकला का उत्तम नमूना है। ऐसा प्रतीत होता है कि इसका निर्माण चौंसठ योगिनी मंदिर के लगभग पचास (50) वर्षो बाद किया गया था। यह मंदिर भगवान विष्णु को समर्पित है, जिसके प्रवेश द्वार पर ही त्रिमूर्ति अर्थात् ब्रह्मा, विष्णु, महेश के दर्शन होते हैं। मंदिर के गर्भ गृह में व दीवारों पर दशावतार की प्रतिमाएं अलग-अलग मुद्राओं में बनाई गई हैं। विशेषकर नरसिंह तथा वराह अवतार की मूर्तियां विशेष रूप में आकर्षित करती है।

खजुराहों के पश्चिमी समूह के मंदिरों में आगे की ओर चित्रगुप्त मंदिर है। बलुआ पत्थरों से निर्मित यह भव्य मंदिर आदित्य यानी सूर्यदेव को कलात्मक रूप में प्रस्तुत करता है। पूरब की दिशा में इसका भव्य प्रवेश द्वार है तथा केंद्र में रथ पर सवार सूर्यदेव की आदमकद सुंदर प्रतिमा है। इसके बाद ब्रह्मदेव को प्रतिष्ठा देने वाला भव्य मंदिर विश्वनाथ है। मंदिर के केंद्र में त्रिमुख ब्रह्मा का मंदिर है। ऊँचे चूबूतरे

पर बने इस मंदिर के उत्तरी द्वार पर सजीव दीखने वाली सिंह मूर्तियां है तथा दक्षिणी द्वार पर हाथियों की सुंदर मूर्तियां पर्यटकों का स्वागत करती हैं।

यहां के मंदिरों के समूह में स्थित भव्य मतंगेश्वर मंदिर की प्रतिष्ठा स्थानीय लोगों में अधिक है और अब भी इसकी पूजा अर्चना की जाती है। मंदिर के गर्भगृह में पत्थर का विशाल शिवलिंग स्थापित है, जिसी उँचाई दस (10) फुट के करीब तथा व्यास 20 फुट से अधिक है। ऐसी मान्यता है कि भारत के विशालतम शिवलिंगों में से एक यह मतंगेश्वर महादेव आज भी जाग्रत स्थिति में हैं और यहां भक्तों की मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं।

दूसरी ओर पूरबी समूह के मंदिरों की ओर पहुंचने के लिए खजुराहो गांव को पार कर के जाना पड़ता है। इस इलाके में मुख्यतः जैन संप्रदाय के मंदिर हैं, इनमें आदिनाथ, पार्श्वनाथ और शांतिनाथ के मंदिर मुख्य हैं। पत्थर के चबूतरों पर स्थित ये मंदिर उत्तुंग शिखरों से विभूषित हैं। जैन मंदिरों का यह पूरबी समूह एक ऊँचे घेरे के अंदर है। ये तुलनात्मक रूप में बाद के बने हैं और आज भी अपेक्षाकृत अच्छी स्थिति में हैं। इनमें पार्श्वनाथ मंदिर प्रमुख है, जिसके केंद्र में काले संगमरमर से निर्मित पार्श्वनाथ की नई प्रतिमा 1860 में स्थापित की गई थी। इस मंदिर की दीवारों तथा परकोठे में यक्ष और अप्सराओं की सुंदर और सुडौल प्रतिमाएं सजी हैं। यही पर उन्नत वक्षस्थल से युक्त एक युवती की प्रसिद्ध प्रतिमा है, जो अपने पांव से कांटा निकालने की भावमुद्रा में है। खजुराहो शिल्पकला के प्रतीक स्वरूप इस मूर्ति को काफी लोकप्रियता मिली है। इसके साथ ही नयनों में काजल लगाती एक सुंदर अप्सरा की प्रतिमा है, जिसकी सौम्यता देखकर दर्शकगण भावविभोर हो उठते हैं।

इनसे अलग हटकर खड़ा एक पुराना जैन मंदिर है जिसके अनेक स्तंभों पर सुंदर नक्काशी की गई है। प्रत्येक खंभे पर जंजीरों के मध्य घंटियां दिखाई गई हैं। इसी कारण लोगों ने इसे घंटायी मंदिर कहकर पुकारना शुरू कर दिया है। इस जैन मंदिर में भगवान महावीर की माता के सोलह (16) दिव्य सपनों का दृश्य प्रदर्शित किया गया है। इनमें यक्ष

और अप्सराओं के अलावा अनेक प्रकार के पशु-पक्षियों की भित्ति प्रतिमाएं हैं। मंदिर के केंद्र में जैन देवी की प्रतिमा पंख फैलाए गरुड़ पक्षी पर आरूढ है।

जैन संप्रदाय के मंदिरों में अपेक्षाकृत बाद में बना मंदिर आदिनाथ का है। ऐसा प्रतीत होता है कि मंदिर के केंद्र स्थान में जैन संत आदिनाथ की प्रतिमा आधुनिक समय में स्थापित की गई है। मुख्य प्रतिमा के अलावा इस मंदिर मे यक्ष और यक्षिणियों की भावमुद्रा में निर्मित अनेक प्रतिमाएं दर्शनीय हैं।

खजुराहो से लगभग पांच किलोमीटर की दूरी पर स्थित है-दुलादेव तथा चतुर्भुज मंदिर। इनमें महादेव शिव की प्रतिमा भगवती पार्वती के साथ प्रतिष्ठित है। चतुर्भुज मंदिर चंदेल राजवंश के द्वारा संभवतः खजुराहो का आखिरी निर्माण है। मंदिर में मुख्य प्रतिमा के अलावा अप्सराओं की अनेक नृत्यरत तथा रतिक्रिया में मग्न सजीव दिखने वाली मूर्तियां हैं।

मध्यकालीन भारत में निर्मित खजुराहो के ये मंदिर शिल्पकला के श्रेष्ठ प्रतिमान हैं तथा चंदेल राजवंश की आराधना, कलाप्रियता और गौरव के कालजयी स्तंभ हैं। इस स्थल पर शैव, वैष्णव तथा जैन संप्रदायों को एक साथ उद्भासित करने वाले ये मंदिर अब भी सर्वधर्म समभाव का पावन संदेश दे रहे हैं।

इन मंदिरों में भारतीय तथा विदेशी दर्शकों को आश्चर्य चकित कर देने वाली अनेक प्रकार की मेथुनरत प्रतिमाएं हैं। अध्यात्मिक भावभूमि के एक ही स्थल पर दिव्य आराधना तथा नर-नारियों की कामक्रीड़ा का ऐसा प्रदर्शन संसार के अन्य देशों में कहीं भी उपलब्ध नहीं है। दार्शनिकों तथा तंत्र विद्या के साधकों के अनुसार यहां नारी को दिव्य शक्ति और सृष्टि के रूप में प्रस्तुत किया गया है, जिससे पुरुष सनातन के संयोग से वंश परंपरा चलाई जाती है। दूसरा मत तांत्रिक क्रिया के अनुसार कुंडलिनी जागरण की साधना है, जिसमें कटिस्थल या योनिद्वार से ऊर्ध्वगामी क्रम में मस्तक तक आठ स्तर चक्र मानव शरीर में होते हैं। क्रमशः संभोग से ऊपर उठकर मस्तक तक पहुंचने के साथ ही कुंडलिनी जगाने की प्रक्रिया पूर्ण होती है, तब दिव्य प्रकाश तथा आध्यात्मिक ऊर्जा

प्राप्ति की मधुमती भूमिका आरंभ होती है।

उल्लेखनीय है कि खजुराहो के मंदिरों में पूजनीय देवी-देवताओं के साथ शक्तिरूपा तथा सृष्टि वाहिनी नारी को अनेक प्रकार की विभिन्न भावमुद्राओं में प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया गया है। शिल्पकारों के कला कौशल और निर्माण कार्य की प्रवीणता ने जैसे पत्थरों को सजीव बनाने का चमत्कार किया है। मातृशक्ति का आराध्य रूप, नृत्यरत चंद्रमुखी, शृंगाररत नायिका, सुडौल स्तनों से संतान को दुग्धपान कराती वात्सल्यपूर्ण भावमुद्रा, दर्पण में सौंदर्य निरखती मुग्धा, परनारी-संभोग देख लाजवंती नायिका, स्थूल नितंबिनी मैथुनरत कामिनी, विस्मय मुद्रा में पत्र लिखती नारी के अलावा और जितने रूप संभव हो सकते हैं शिल्पकारों ने सबको प्रस्तुत करने का सफल प्रयास किया है।

जहां तक इसके नाम खजुराहो की बात है, अनुमान है कि इस इलाके में पाए जाने वाले खजूर वृक्ष की बहुतायत से खजुराहो का नाम पड़ा होगा। स्वतंत्रता के बाद खजुराहो की ओर अधिक ध्यान दिया गया। इसे अब एक लोकप्रिय पर्यटन केंद्र के रूप में विकसित किया गया है। सांस्कृतिक वैभव को उजागर करने के लिए यहां पर प्रतिवर्ष खजुराहो समारोह के नाम से सांस्कृतिक उत्सव का आयोजन किया जाता है।

कैसे पहुंचे, कहां ठहरें

मध्य प्रदेश के छतरपुर जिले में स्थित खजुराहो पहुंचने के लिए दिल्ली से वायुयान सेवा उपलब्ध है। वहां विमानपत्तन (एयरपोर्ट) है, किंतु रेल स्टेशन नहीं हैं। रेल स्टेशन छतरपुर से 44 किलोमीटर तथा पन्ना से 30 किलोमीटर पक्की सड़क द्वारा खजुराहो पहुंचा जा सकता है।

भारत सरकार तथा राज्य सरकार के पर्यटन विभाग द्वारा खजुराहो को एक सुंदर पर्यटन स्थल के रूप में विकसित किया गया है। सरकारी पर्यटक निवास के अलावा यहां आधुनिक पांच सितारा होटल भी है। इनके अलावा ठहरने के तथा घूमने के लिए समुचित सुविधाएं उपलब्ध हैं। •

बेमिसाल ताजमहल

सातवां आश्चर्यः बेमिसाल ताजमहल

उत्तर प्रदेश के आगरा शहर में सफेद संगमरमर से बनी आलीशान इमारत ताजमहल मुगल सम्राट शाहजहाँ के प्रेम का चिंरतन प्रतीक है। यह भारत का सातवाँ आश्चर्य कहलाता है। भारत में आने वाले किसी भी पर्यटक की यह पहली पसंद है। भारतवासियों के मन में ताजमहल के प्रति स्नेह और गौरव की भावना विद्यमान रहती है। यमुना तट पर स्थित इस ताजमहल को मुगल बादशाह शाहजहां ने अपनी दूसरी पत्नी मुमताज की याद में बनवाया था। ताज महल के निर्माण कार्य में 20 हजार लोगों को लगाया गया और इसके लिए निर्माण सामग्री पूरे भारत के अलावा मध्य एशिया से मंगाई गई थी।

ताजमहल लाल रंग के बलुआ पत्थर की ऊँची बुनियाद पर खड़ा है जिसके उपरी हिस्से पर सफेद संगमरमर की छत है जिस पर महराबदार मीनारों से घिरा प्रसिद्ध गुंबद टिका है। इस गुंबद के भीतर जवाहरातों से जड़ी बेगम मुमताज महल की कब्र है।

ताजमहल को देखने के लिए प्रतिवर्ष 20 लाख से ज्यादा पर्यटक आते हैं। ताज महल में प्रवेश शुल्क के साथ विकास प्राधिकरण द्वारा पथकर भी लिया जाता है। यहां प्रवेश के लिए पथकर सहित लिया जाने वाला शुल्क (2007) भारतीयों और विदेशियों के लिए इस तरह से है:-

	प्रवेश शुल्क	पथकर	कुल (रु.में)
भारतीय	10	10	20
विदेशी नागरिक	250	500	750

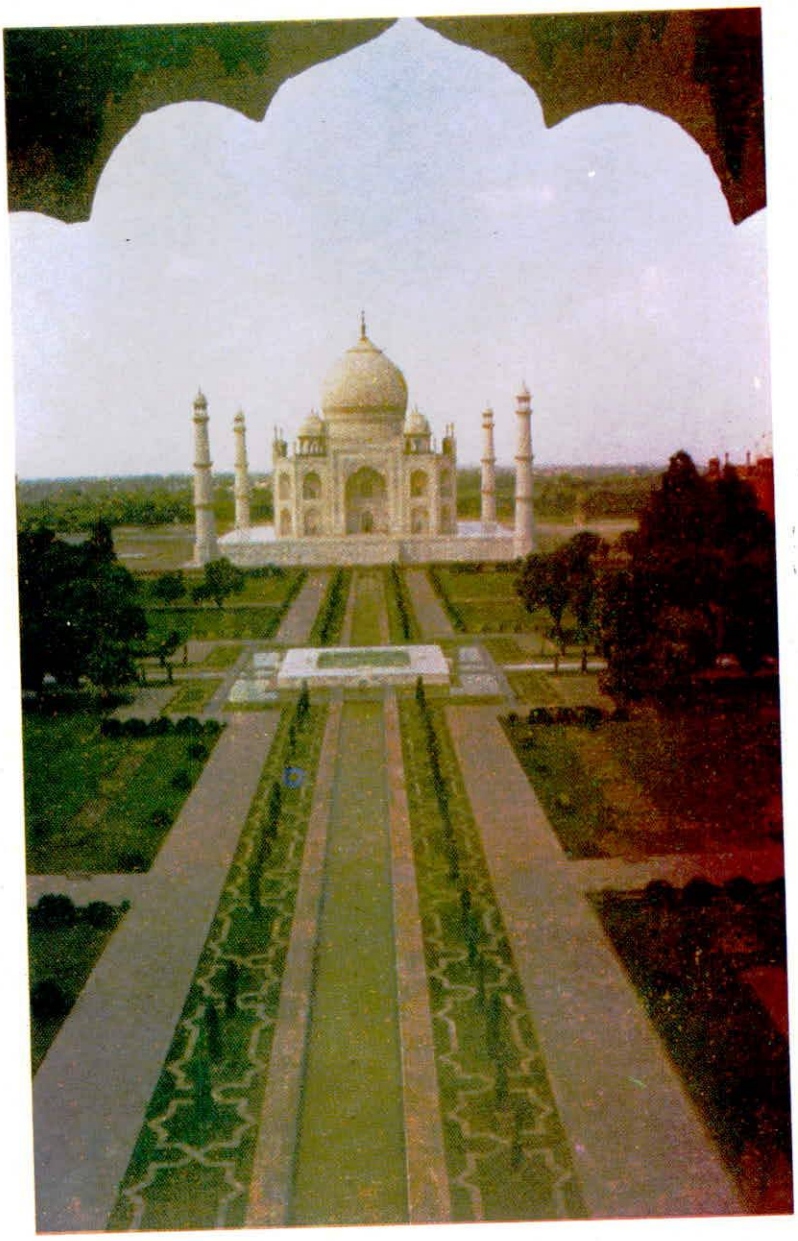

चित्र 10. ताजमहल

ताजमहल की मजबूती

ताज महल का ढाँचा असाधारण रूप से मजबूत है। राष्ट्रीय भूभौतिकी अनुसंधान संस्थान और केंद्रीय भवन अनुसंधान संस्थान, रुड़की जैसे जाने-माने संस्थान साथ मिलकर नियमित रूप से ताज महल की ढाँचागत मजबूती की देख रेख कर रहे हैं। इसकी ढाँचागत मजबूती को लेकर दबाव विश्लेषण, भवन सामग्री की स्थिति, तकनीकी अभियांत्रिकी और भूकंपीय सुरक्षा जैसे विभिन्न पहलुओं को ध्यान में रखते हुए अनेक वैज्ञानिक अध्ययन किए जा चुके हैं। ताजा रिपोर्ट के मुताबिक स्मारक को किसी भी तरह का कोई खतरा नहीं है। इस अध्ययन में यह भी स्पष्ट किया गया है कि स्मारक की मजबूती के साथ-साथ नींव में भी किसी तरह की कोई कमजोरी नहीं है।

ताज महल की मीनारें

ऐसा अनुमान लगाया जा रहा था कि ताजमहल की मीनारें झुक रही हैं। किंतु यह वास्तविकता से परे है। भारतीय सर्वेक्षण द्वारा किए गए अध्ययनों से यह पता चलता है कि ताजमहल की चारों मीनारों के शीर्ष कोणों में कोई बदलाव नहीं है। हाल की रिपोर्ट में उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा है कि चारों मीनारों और ताज का ढाँचा आज भी उतना ही मजबूत है जितना कि अपने निर्माण काल में था।

संरक्षण

भारतीय पुरात्व सर्वेक्षण ताजमहल पर नियमित रूप से संरक्षण और प्रतिरक्षण का कार्य करता है। सन् 1970 ई. में आगरा से करीब 40 किलोमीटर उत्तर में मथुरा में तेल शोधन कारखाने के स्थापित हो जाने के बाद से ताजमहल का संरक्षण एक गहन चिंता का विषय बन गया है। भारतीय पुरातत्वीय सर्वेक्षण ताजमहल के आस-पास की वायु मात्रा में सल्फर-डाई-ऑक्साइड, धूल की नियमित रूप से निगरानी रख रहा है।

पुरातत्व विभाग ने वर्ष 2001-03 में ताजमहल के मुख्य मकबरे की सतह पर जमी धूल और गंदगी को साफ करने के लिए मुलतानी मिट्टी का प्रयोग किया। मुल्तानी मिट्टी का गाढ़ा घोल बनाकर

संगमरमर (मार्बल) की सतह पर लगाया गया। इस घोल को कुछ दिनों के लिए मार्बल पर लगाकर अपने आप ही गिरने के लिए छोड़ दिया गया। मिट्टी के छूटने के बाद सतह को नमक रहित पानी से साफ कर दिया गया। मुल्तानी मिट्टी का प्रयोग आम तौर पर पाँच वर्षों में एक बार अथवा जरूरत के मुताबिक किया जाता है जिससे ताज महल के संगमरमर की सफेद आभा खिल उठती है।

ताज महल का रात्रि अवलोकन

पर्यटकों द्वारा ताज महल को रात्रि में देखने की विशेष मांग को ध्यान में रखते हुए सरकार ने पूर्णमासी के समय में रात्रि में ताज का अवलोकन खोल दिया था। लेकिन सुरक्षा कारणों से रात्रि अवलोकन को सन् 1996 से रोक दिया गया। उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा किए गए एक अनुरोध के बाद, उच्चतम न्यायालय ने कुछ निश्चित शर्तों के बाद नवंबर, 2004 में रात्रि अवलोकन की फिर से इजाजत दे दी। पूर्णमासी एवं पूर्णमासी के दो दिन पहले और दो दिन बाद अर्थात् एक माह में पांच दिन तक रात्रि अवलोकन की इजाजत दी गई। (शुक्रवार और रमजान के महीनों के अतिरिक्त)। रात्रि अवलोकन रात्रि 8 बजकर 30 मिनट से रात्रि 12 बजकर 30 मिनट तक खुला है और इसमें प्रत्येक दिन 50 पर्यटकों के एक समूह में कुल 400 पर्यटकों को इजाजत दी गई है। पर्यटकों को मुख्य प्रवेश द्वार के निकट लाल पत्थरों के परिसर से आगे जाने की इजाजत दी गई, इसके लिए उन्हें प्रति व्यक्ति 500 रुपये का अतिरिक्त शुल्क अदा करना होता है। फिर भी आम आदमी से लेकर राष्ट्रपति तक अमर प्रेम के प्रतीक विश्वप्रसिद्ध ताजमहल को देखने के लिए लालायित रहते हैं।

कैसे पहुँचे, कहाँ ठहरे-

परिवहन के साधनों जैसे वायुयान, रेलमार्ग व सड़क परिवहन द्वारा आगरा देश के विभिन्न महानगरों (दिल्ली, कोलकाता, मुंबई, चेन्नई आदि) से अच्छी तरह से जुड़ा हुआ है। यहां ठहरने की पर्याप्त सुविधा उपलब्ध है।

भारत में उपलब्ध शेष आश्चर्य

हमारा भारत गौरवपूर्ण अतीत तथा विविधताओं का देश है। आधुनिक स्थिति जो भी हो भारत संसार के उन देशों में प्रमुख है, जो अपनी प्रचीन संस्कृति तथा दर्शनीय स्थलों के लिए प्रसिद्ध हैं। यह एक ऐतिहासिक तथ्य है कि प्राचीन सभ्यता का विकास नदी-घटियों की उर्वर भूमियों में हुआ। यही तथ्य भारत के लिए भी उचित है। यह गंगा-सिंधु का विस्तृत मैदान (जिसका कुछ हिस्सा अब पाकिस्तान में है) विश्व की प्रचीनतम सभ्यताओं के उद्गम और विकास के लिए सुप्रसिद्ध है।

केवल सभ्यता और संस्कृति ही नहीं, भारत संसार के कई महान धर्मो का उद्गम स्थल रहा है, जिनमें हिंदू बौद्ध, जैन और सिख प्रमुख हैं। इनके अलावा इस देश में इस्लाम तथा इसाई धर्म का भी विस्तार हुआ है। फलस्वरूप यहां के विभिन्न इलाकों में मंदिर-मस्जिद के साथ अनेक बौद्धमठ, गिरजाघर तथा गुरुद्वारों को देखा जा सकता है।

भरत के सिंधु, गंगा, गोदावरी, कावेरी, तुंगभद्रा, नर्मदा जैसी मुख्य नदियों के किनारे अनेक नगर बसे और विकसित हुए। इनके साथ ही सैकड़ों नहीं, हजारों वर्ष पहले निर्मित अनेक धरोहरों के प्रतीक अथवा ध्वसांवशेष अब भी वर्तमान हैं। सोने की चिड़िया कहलाने वाले भारत देश पर अनेक आक्रमण हुए- सिकंदर, गौरी, बाबर, नादिरशाह, क्लाइव जैसे कई सेनानियों ने यहां की धरती पर अपनी छाप छोड़ी है। कई तो यहां की धन संपदा लूट कर ले गए, लेकिन कुछ सेनानी विजयी होकर आए और यहीं के होकर रह

गए। भारतीय इतिहास में इनका स्पष्ट प्रभाव कई रूपों में परिलक्षित होता है। केवल यही नहीं, इनके द्वारा अपनी राजधानियों तथा विभिन्न स्थानों पर भव्य तथा दर्शनीय निर्माण-कार्यो को पूर्ण किया, जो अब ऐतिहासिक धरोहरों के रूप में भारतीय गौरव के आश्चर्यजनक प्रतीक बन गए हैं।

संयुक्त राष्ट्र संघ के अंतर्गत यूनेस्को नामक संगठन ने सन् 1972 में विश्व सास्कृतिक धरोहर तथा उनकी सुरक्षा की महत्वाकांक्षी योजना बनाई। इसके द्वारा प्रतिवर्ष विभिन्न देशों में उपलब्ध विशेष महत्व के स्थानों तथा स्मारकों का अध्ययन करके उनकी सुरक्षा के लिए विशेष अनुदान की व्यवस्था की जाती है।

अब तक यूनेस्को द्वारा विश्व धरोहरों के लिए चयन किए गए भारतीय स्थलों में निम्नांकित हैं :-

आगरा का ताजमहल और किला
अजंता तथा एलोरा की गुफाएं,
कोणार्क का सूर्य मंदिर,
सागर तट पर स्थित महाबलिपुरम,
गोआ का गिरजाघर,
खुजराहो का मंदिर समूह,
फतेहपुर सीकरी-मुगलकालीन नगर,
पट्टदकल के मंदिर समूह,
एलिफैंटा की गुफाएं,
तंजावुर का बृहदेश्वर मंदिर,
सांची का बौद्ध-स्तूप,
दिल्ली की कुतुबमीनार
हुमायूं का मकबरा

इनके अलावा नालंदा विश्वविद्यालय नालंदा, हैदराबाद के चार मीनार, बोधगया का महाबोधि मंदिर, लेह का बौद्ध मठ तथा अजमेर शरीफ की दरगाह को यूनस्को द्वारा तालिका में शामिल करने के लिए गहन अध्ययन चल रहा है। भारत में स्थित विभिन्न

3444 HRD/09-4

ऐतिहासिक सांस्कृतिक केंद्रों की सुरक्षा के लिए भारत का सांस्कृतिक विभाग भी सदैव प्रयत्नशील है। इस विभाग के द्वारा सांस्कृतिक घरोहरों के अध्ययन ओर पहचान की प्रक्रिया चलती रहती है। इक्कीसवीं सदी के आरंभ में पूरे देश में मतदान द्वारा लोकप्रियता के आधार पर भारत के सात आश्चर्यों यथा- आगरा का ताज महल, अमृतसर का स्वर्ण मंदिर, कोणार्क का सूर्य मंदिर समूह तथा विजयनगर हंपी के अवशेष को विशिष्ट स्थान प्राप्त हो चुका है। किंतु इन सातों के अलावा एक नहीं, इक्कीस ऐसे ऐतिहासिक तथा वैभवपूर्ण सांस्कृतिक स्थल हैं, जिन्हें कालक्रम से आश्चर्यजनक धरोहर के रूप में मान्यता मिलनी चाहिए।
ये इस प्रकार हैं :

प्राचीन

महाबलिपुरम्
पटट्दकल स्मारक समूह, कर्णाटक,
चिंदावरम् मंदिर
अजंता और एलोरा गुफाएं बृहदेश्वर मंदिर, तंजावुर
सांची का बौद्ध स्तूप

मध्यकालीन

दिल्ली की कुतुबमीनार
रामेश्वरम
गोआ का गिरजाघर
लेह का बौद्ध मठ
चार मीनार, हैदराबाद
जगन्नाथपुरी
विक्टोरिया टर्मिनल, मुंबई

अर्वाचीन

हावड़ा ब्रिज, कोलकाता
विक्टोरिया मेमोरियल, कोलकाता

वृंदावन गार्डन
नागार्जुन सागर बांध, भाखड़ा-नांगल बांध, कमल (लोटस) मंदिर, अक्षरधाम

भारत के चयनित सात आश्चर्यो के अलावा यहां के राज्यों में अनेक इमारतें मौजूद हैं, जो सांस्कृतिक धरोहरों के रूप में विश्व प्रसिद्ध हैं। इनके अवलोकन के लिए देश-विदेश से लाखों पर्यटक पहुंचते हैं। ऐसे लोकप्रिय सास्कृतिक धरोहरों में से कतिपय महत्वपूर्ण केंद्रों का परिचय प्रस्तुत है।

1 रामेश्वरम् का मुख्य मंदिर

तमिलनाडु प्रदेश के दक्षिणी छोर पर सागर तट के पास एक छोटा द्वीप है, जिसे पौराणिक साहित्य में शंखद्वीप कहा गया है। यहीं सागर लहरों से सदा आलोड़ित तट पर स्थित है रामनाथ स्वामी का भव्य मंदिर। कठोर चट्टानों से बने मुख्य मंदिर में श्रीराम द्वारा स्थापित स्फटिक का अत्यंत सुंदर ज्योतिर्लिंग है। इसके ऊपर शेषनाग के फणों का विशाल छत्र है। ऐसी परंपरा है कि यहां हरिद्वार और प्रयाग संगम से लाकर गंगाजल चढ़ाने की ही धार्मिक महत्ता है।

समुद्र तट पर स्थित रामेश्वरम् के इस विशाल मंदिर के चारों ओर पत्थर की ऊंची दीवार है। मुख्य मंदिर के पूरब और पश्चिम में क्रमश दस और सात मंजिले उत्तुंग गोपुरम् बने हैं, जिनमें अनेक देवी-देवताओं और पशु-पक्षियों की मूर्तियां है।

मुख्य मंदिर के चतुर्दिक् पत्थर के स्तंभों से निर्मित विशाल परिक्रमा-पथ यहां की अपनी अलग विशेषता है। बारह सौ मीटर से भी अधिक लंबाई वाली दीर्घा में करीब ग्यारह सौ प्रस्तर स्तंभ (दोनों ओर मिलाकर) हैं, जिन पर कलात्मक खुदाई की गई है। इसे संसार का सबसे बड़ा परिक्रमा पथ माना जाता है जो भारतीय शिल्प का बेजोड़ नमूना है। मुख्य मंदिर का आहाता दो सौ मीटर

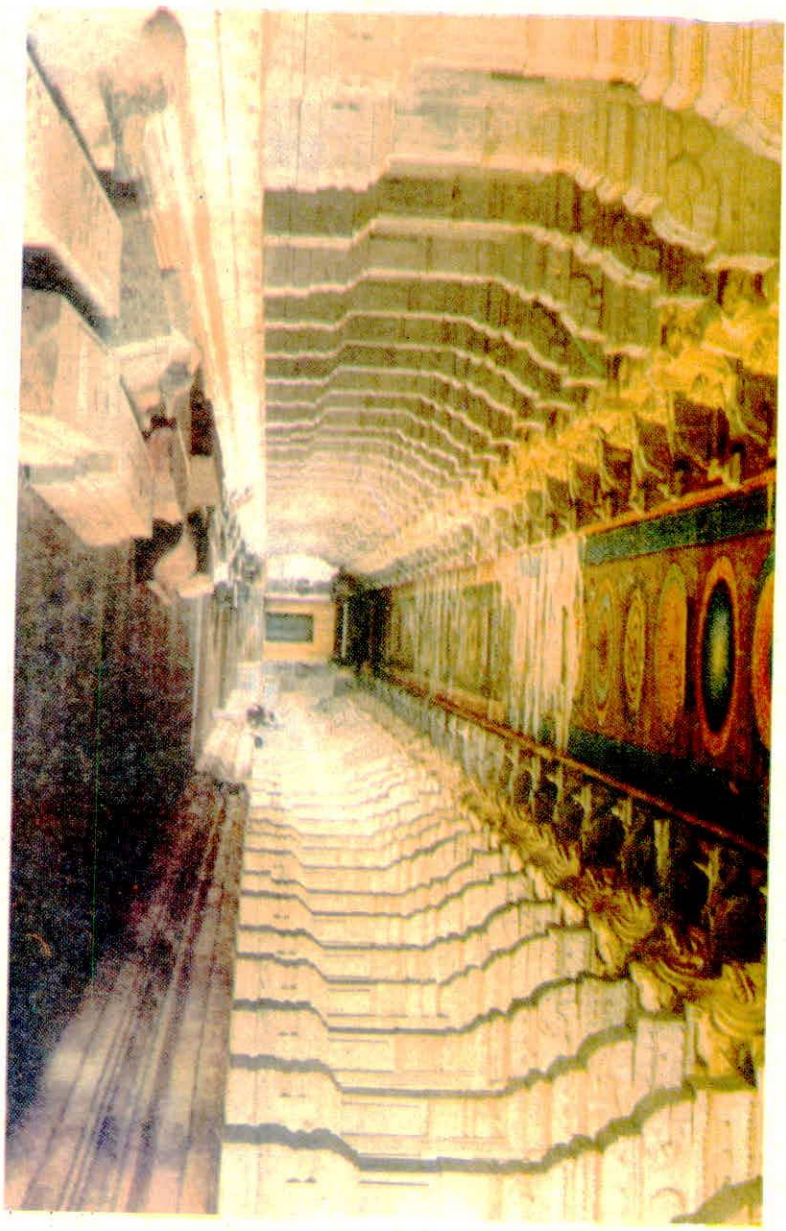

चित्र 11. रामेश्वरम मंदिर का प्रदक्षिणापथ

चौड़ा और दो सौ आठ मीटर लंबा है। मंदिर के पास और परिक्रमा पथ के साथ सब मिलाकर बाईस कूप और छोटे-बड़े सरोवर हैं। ऐसी मान्यता है कि इनके जल से स्नान करने से भक्तजनों की मनोकामना पूरी होती है। विशेषकर युगल दंपत्ति संतान की कामना से यहां के जल से स्नान करके पूजा करते हैं।

मंदिर के अंदर रामलिंग स्वामी तथा पार्वती (पर्वती-वर्धिनी अम्मन) की प्रतिमाएं हैं। साथ में विश्वनाथ स्वामी और विशालाक्ष्मी अम्मन की प्रतिमाएं हैं। बाहर में सोने से मढ़ा हुआ गरुड़ स्तंभ है। इसके पास ही सफेद रंग की नंदी की करीब चार मीटर से अधिक ऊंची प्रतिमा है।

रामेश्वरम् पहुंचने के लिए तमिलनाडु के रामनाथपुरम् से पंबन होकर रेल तथा सड़क मार्ग उपलब्ध हैं।

2 पुरी का जगन्नाथ मंदिर

भारत के पूर्वी राज्य उड़ीसा में सागर तट पर स्थित है जगन्नाथपुरी यह किसी समय कलिंग साम्राज्य की राजधानी नगर था। यहीं स्थित है बारहवीं सदी में कलिंग के महाराजा चौड़गंग द्वारा बनाया गया करीब पैंसठ (65) मी. ऊँचा सुप्रसिद्ध जगन्नाथ मंदिर। जगन्नाथ मंदिर के मुख्य भाग को विमान या श्रीमंदिर कहते हैं। यहीं रत्नवेदी पर भगवान जगन्नाथ, सुभद्रा और बलराम की महादारु लकड़ी से निर्मित तीन प्रतिमाएं है। यही आश्यर्य की बात है कि जब भारत ही नही, संसार के अनेक स्थानों पर मूर्तियां धातु, मिट्टी या पत्थर से बनाई जाती रही थीं- पुरी में पूजनीय मूर्तियों का निर्माण काठ से किया गया। प्राचीन कथा है कि प्रारंभ में इन मूर्तियों का निर्माण बहुत गोपनीय रूप में स्वंय देवता विश्वकर्मा कर रहे थे- लेकिन किसी विघ्न के कारण प्रतिमा भी को अधूरा छोड़ कर अलोप हो गए। अब भी इस मंदिर में स्थापित तीन अधूरी प्रतिमाओं की ही पूजा-अर्चना होती है। पुरानी परंपरा के अनुसार प्रत्येक बारह वर्षों

चित्र 12. जगन्नाथ मंदिर पुरी

की अवधि के बाद इन तीनों प्रतिमाओं को गुप्तरूप से पुन निर्मित कर वेदी पर स्थापित किया जाता है।

जगन्नाथपुरी का विशाल मंदिर ग्रेनाइट बलुआ पत्थर तथा संगमरमर से निर्मित है। इसकी वास्तुकला भी दर्शनीय हैं, जिसमें कलिंग तथा द्रविड भवननिर्माण शैली का मिश्रण है। पुरी के जगन्नाथ मंदिर से जुड़ा सबसे महत्वपूर्ण समारोह रथयात्रा है। प्रत्येक वर्ष आषाढ़ शुक्ल द्वितीया (जुलाई माह) को मंदिर से तीनों प्रतिमाओं को निकालकर सजे-सजाए विशाल रथों में रखा जाता है। फिर भक्तों के विशाल समुदाय के साथ भक्ति संगीत में विभोर श्रद्धालुओं द्वारा रथों को करीब तीन किमी. दूर गुंडिचा मंदिर (मौसी का घर) तक पहुंचाया जाता है। इस भव्य रथयात्रा में देश-विदेश से लाखों की संख्या में आकर लोग शामिल होते हैं।

यहां पहुंचने के लिए रेल और सड़क मार्ग के अलावा राजधानी भुवनेश्वर तक वायुमार्ग से भी पहुंचा जा सकता है।

3. बृहदेश्वर मंदिर, तंजावुर

दसवीं शताब्दी में चोल राजाओं ने पल्लवों पर विजय प्राप्त की। भारतीय इतिहास में चोल-काल की विशिष्ट कलात्मक उपलब्धियों का उल्लेख प्राप्त होता है, क्योंकि प्रसिदध चोल कांस्य शिल्प कृतियों को भारतीय कला की उत्कृष्ट कृतियों के रूप में जाना जाता है।

तंजावुर स्थित बृहदेश्वर मंदिर एक सर्वाधिक महत्वपूर्ण चोल स्मारक है। इस मंदिर को शिव-महिमा के कारण बृहदेश्वर कहा जाता है। इसे 'राजाओं के राजा' राजराज प्रथम द्वारा निर्मित कराया गया। स्वंय राजा ने राजतिलक के समय अपना नाम इसी प्रकार घोषित किया था।

मंदिर की वास्तुकला योजना सामान्य तथा पारंपरिक है। प्रासाद, मंडप, नंदी और दो गोपुरम पूर्व-पश्चिम अक्षांश के ठीक ऊपर अवस्थित हैं। मंदिर का सर्वाधिक प्रभावकारी पहलू है- उसका विमान। यह साठ मीटर ऊंचा है और निर्माण के समय शायद यह एशिया की सबसे ऊँची वास्तुकला-संरचना रही होगी। विमान के ऊपर अवस्थित विशाल शिखर का वजन अस्सी टन से भी अधिक होगा, ऐसा माना जाता है।

विमान के दोनों ओर बैठे हुए अग्रोन्मुख शीर्ष वाले नंदी हमें महाबलिपुरम् के नंदी के प्रतिरूप की याद दिलाते प्रतीत होते हैं। तीर्थ मंदिर में स्थापित लिंग मंदिर के ही समान, आकार में विशाल है। विमानके चबूतरे पर स्थित कुछ शिलालेख चोल-काल के दौरान जीवन-शैली का विवरण प्रस्तुत करते हैं। इस मंदिर में गोपुरमों की वास्तुकलात्मक शैली, दक्षिण भारतीय मंदिरों के गोपुरमों के निर्माण की प्राचीन परंपराओं से अलग है। मंदिर के दोनों पूर्वी गोपुरमों पर 1014 ईसा.पू. समय के शिलालेख हैं। ये शायद गोपुरमों का निर्माण पूर्ण होने के वर्ष को इंगित करते हैं।

4. पट्टदकल मंदिर, कर्नाटक

प्राचीन सांस्कृतिक केद्रों, नामशः ऐहोल और बादामी के पश्चात् बनी प्रमुख चालुक्य राजधानी पट्टदकल, बादामी से लगभग सोलह किलोमीटर दूर है। यह स्थान कर्नाटक राज्य के प्रमुख सिंचाई स्रोत, चित्रोपम मालप्रभा नदी के किनारे अवस्थित है। पट्टदकल को सुंदर प्राचीन पश्चिमी चालुक्य मंदिरों के लिए जाना जाता है। यह राज्य विजयादित्य और विक्रमादित्य के शासनकाल में अपनी पराकाष्ठा पर पहुँचा। पट्टदकल में वास्तुकला की शैली आठवीं शताब्दी ईसा पश्चात् के प्रथम अर्धभाग में उद्भूत हुई।

पट्टदकल में मंदिरों की दो शैलियाँ देखी जा सकती हैं- नागर और द्रविड। वास्तुकलात्मक विवरणों का अध्ययन करते समय पता चलता है कि दोनों ही शैलियों ने एक-दूसरे को प्रभावित किया है।

ऐसा माना जाता है कि प्राचीन पश्चिमी चालुक्य वंश के राजा का राजतिलक समारोह पट्टदकल में संपन्न हुआ था। शिव को समर्पित, विरूपाक्ष मंदिर को पूर्व आठवीं शताब्दी में चालुक्य रानी ने, अपने राजसी पति द्वारा पड़ोसी पल्लव राज्य पर विजय प्राप्त करने की खुशी में बनवाया। विरूपाक्ष के अग्र भाग में नंदी मंडप सहित एक जीवंत तीर्थ मंदिर है। आलों में जोड़ों (दंपतियों) की विशाल आकृतियां हैं, जो उस समय की केश सज्जा तथा आभूषणों को प्रदर्शित करती हैं। छत पर बनी सूर्य-आकृति आत्मा की जीवंतता को प्रतीक-रूप में प्रस्तुत करती है, जिसमें सूर्यदेव अरुण द्वारा स्वयं चलाए जा रहे सात घोड़ों से युक्त रथ में वे उषा और प्रत्यूषा के साथ खड़े हैं। वर्गाकार शिलाखंडों तथा मंदिर के स्तंभों पर रामायण तथा महाभारत के प्रसंगों की चित्रवल्लरियों की बहुलता है।

तमिलनाडु का मुख्य नगर तंजावुर रेल मार्ग तथा अच्छी सड़कों से जुड़ा है।

5. महाबलिपुरम्- सास्कृतिक अवशेष

तमिलनाडु राज्य की राजधानी चेन्नई से करीब साठ कि.मी. दक्षिण की और सागर तट पर स्थित है- महाबलिपुरम्। यह स्थान अपने पुरातन मंदिरों तथा स्थापत्य कला के वैभव के लिए भारत ही नहीं, संपूर्ण विश्व में मशहूर है। यह ऐतिहासिक तथ्य है कि पत्थरों को तराशकर कलात्मक मंदिरों तथा गुफाओं के निर्माण का काम पल्लव राजवंश के राजाओं के समय हुआ था। पल्लव वंश का राज्यकाल सन् 600 से 750 ई. के मध्य माना जाता है। महेंद्र वर्मा जैसे एक राजा ने नही, बल्कि एक के बाद एक अनेक पल्लव राजाओं ने निर्माण कार्य में रुचि दिखाई और वर्षों तक निपुण कारीगरों के अथक परिश्रम से निर्माण को पूरा करने का प्रयत्न किया।

चित्र 13. महाबलिपुरम

पुराने समय में, विशेषकर पल्लव राजाओं के समय में आपसी विवाद का फैसला मल्लयुद्ध के द्वारा भी किया जाता था अतएव मल्लयुद्ध में विजय की लालसा पूरी करने के लिए पुरुष वर्ग शारीरिक शक्ति बनाए रखना चाहता था। इसके लिए अभ्यास के अलावा देवी-देवताओं की पूजा-अर्चना खूब होती थी। विजय होने पर राजा अपने उल्लास का आयोजन करता था। साथ ही अपनी उपलब्धि को चिरस्मरणीय रखने के लिए मंदिरों तथा स्मारकों का निर्माण भी करवाता था।

महाबलिपुर का प्रचलित तमिल नाम मामल्लपुरम् है जिसका अर्थ होता है, मल्लों या पहलवानों की नगरी। उस प्रचीन वैभव का गौरवपूर्ण अवशेष अब भी सागर तट के पास मौजूद है जिसकी स्थापत्य-कला को देखकर आज के इंजीनियर भी आश्चर्यचकित रह जाते हैं। सैकड़ों वर्ष पहले जब कि कारीगरों के पास लोहे की छेनी और हथौड़े के अलावा और कोई विशेष औजार नहीं रहा होगा, कठिन ग्रेनाइट पत्थरों को तराश कर सजीव दीखने वाली मूर्तियां बना देना सचमुच आश्चर्यजनक है। महाबलिपुरम्के मंदिरों के निर्माण की एक और विशेषता यह भी है कि पत्थर के टुकड़े कहीं दूसरी जगह से नहीं लाए गए, बल्कि वहीं पर स्थित पहाड़ियों और पत्थर के टीलों को तलाश करके मूर्तियों और विभिन्न प्रकार की कलाकृतियों का निर्माण किया गया। यहां का सबसे महत्वपूर्ण स्थल पल्लव राजाओं द्वारा निर्मित सागर तट मंदिर है। बिल्कुल समुद्र के किनारे, जहां बंगाल की खाड़ी से उठकर गहरे नीले रंग की लहरें मंदिर की दीवारों से टकरा कर सफेद झाग उगलती रहती हैं। एक छोटी पहाड़ी को तराश कर बनाया गया सैकड़ों वर्ष पुराना मंदिर दो भागों में विभाजित है। प्रथम में शेषशायी विष्णु की प्रतिमा है तथा दूसरे में शिवलिंग स्थापित है। ग्रेनाइट की कठोर चट्टानों को भी क्रूर काल तथा सागरीय हवा और पानी के प्रहारों ने घिस कर समाप्त करने की कोशिश की है। मुख्य मंदिर के गर्भगृह में स्थित शिवलिंग को किसी आक्रमणकारी ने तोड़ने की चेष्टा की थी

लेकिन उसका ऊपरी भाग ही ध्वस्त हो सका। अवशेष अब तक वहीं स्थित है। मूर्ति के भंग होने की वजह से अब इस मंदिर में पूजा-अर्चना नही होती। फिरभी अपने गौरवपूर्ण अतीत के लिए यह वंदनीय है, यहां प्रतिदिन दूर-दूर से हजारों यात्री इसके दर्शन के लिए आते रहते हैं। महाबलिपुरम् में सागर से कुछ दूर हटकर छोटी-सी पहाड़ी ढ़ालों को तराश कर उन पर अनेक देवी-देवताओं और जीव-जंतुओं की मूर्तियां खोदी गई हैं, जिनमें अनेक पौराणिक कथाओं की झांकी कलात्मक रूप में उपस्थित की गई है। प्रस्तर भित्ति पर खुदाई से निर्मित यह शिल्प-खंड संसार में सबसे विशाल कलात्मक प्रतीक माना जाता है।

6. महाबोधि मंदिर

बौद्धों का यह परम पवित्र स्थान बिहार राज्य में गया के निकट निरंजना नदी के तट पर अवस्थित है। यहां का बुद्ध मंदिर संसार के पवित्रतम धार्मिक स्थानों में प्रतिष्ठित है, क्योंकि इसी स्थान पर कपिलवस्तु के राजकुमार सिद्धार्थ गौतम को पीपल वृक्ष के नीचे महाबोधि अर्थात् परम ज्ञान की दिव्य ज्योति प्राप्त हुई। यह पीपल वृक्ष बोधिद्रुम के नाम से प्रसिद्ध है और इसी के पास वह विशाल मंदिर है, जिसे अब महाबोधि मंदिर कहा जाता है।

यह विशाल मंदिर बौद्ध स्थापत्य कला की अनुपम देन है। चौकोर चौकी से ऊपर उठता हुआ मंदिर पिरामिड की भांति खड़ा है। चारो कोनों पर मुख्य मंदिर के अनुरूप चार छोटे मंदिर प्रतीक हैं। मुख्य मंदिर चौकी से शिखर की ओर कोणात्मक रूप ग्रहण कर लेता है। इसकी बाहरी भित्ति पर खुदे अनेक आलों पर तरह-तरह की आकृतियां बनी हैं। मंदिर के ऊंचे शिखर पर चक्राकार पुंज है तथा साथ में बौद्ध धर्म की पताका लहराती है।

बोध गया के मुख्य मंदिर का प्रवेश द्वार पूरब की ओर है। अंत्यत ही कलापूर्ण है यह तोरण-द्वार। इस पर सिंह, हिरण तथा

महाबोधि मंदिर

अन्य पशु-पक्षियों की आकृतियां खुदी हैं। ऐसा प्रतीत होता है कि प्रवेश द्वार मंदिर के निर्माण के बहुत बाद बना होगा। यहां पर बर्मा में निर्मित जो कांसे का घंटा है उसका वजन पांच क्विंटल से कम नहीं होगा। बजाए जाने पर देर तक उसकी ध्वनि गूंजती रहती है, उसकी प्रतिध्वनि से दिव्य वातावरण का सृजन होता है।

मुख्य मंदिर के केंद्र में पश्चिम की दीवार से सटी पत्थर की एक ऊंची वेदी है जिस पर भगवान की विशाल प्रतिमा विराजमान है। भूमि स्पर्शमुद्रा में निर्मित इस शांत और गंभीर प्रतिमा पर सोने का पानी फेरकर स्वर्णिम आभा उत्पन्न की गई है। बुद्ध अभिताभ जो थे। अनुश्रुति के अनुसार यह ठीक वही स्थान है जहां सिद्धार्थ गौतम बोधि प्राप्ति के लिए पीपल वृक्ष के नीचे बैठकर तपस्या करते थे। यहां मंदिर की मुख्य वेदी पर अनेक दीपक सदा जगमगाते रहते हैं।

गया रेलवे जंक्शन से बोधगया के लिए करीब बारह किलोमीटर लंबी पक्की सड़क दक्षिण की ओर जाती है। इस पर बस टैक्सी आदि वाहन सुविधा से मिल जाते हैं। चार-पांच किलोमीटर दूर से ही बोधगया के महाबोधि मंदिर का उत्तुंग शिखर सारे संसार को करुणा और शांति का पावन संदेश देता हुआ प्रतीत होता है। उसके निकट ही अब मगध विश्वविद्यालय का विशाल परिसर फैला हुआ है।

7. कुतुब मीनार दिल्ली

भारत के सर्वाधिक प्राचीन तथा ऐतिहासिक नगरों में से एक है दिल्ली। यह अनेक महान साम्राज्यों और शक्तिशाली राज्यों की राजधानी रही है तथा कई सभ्यताओं के उत्थान और पतन की साक्षी है। दिल्ली का प्रचीनतम संदर्भ हमें प्रसिद्ध महाकाव्य महाभारत में प्राप्त होता है, जिसमें यमुना नदी के किनारे बसे इंद्रप्रस्थ नगर का उल्लेख है। संभवत दिल्ली का स्थानविशेष के रूप में उपयोग सर्वप्रथम पहली और दूसरी शताब्दी ईसवी पू. में किया गया।

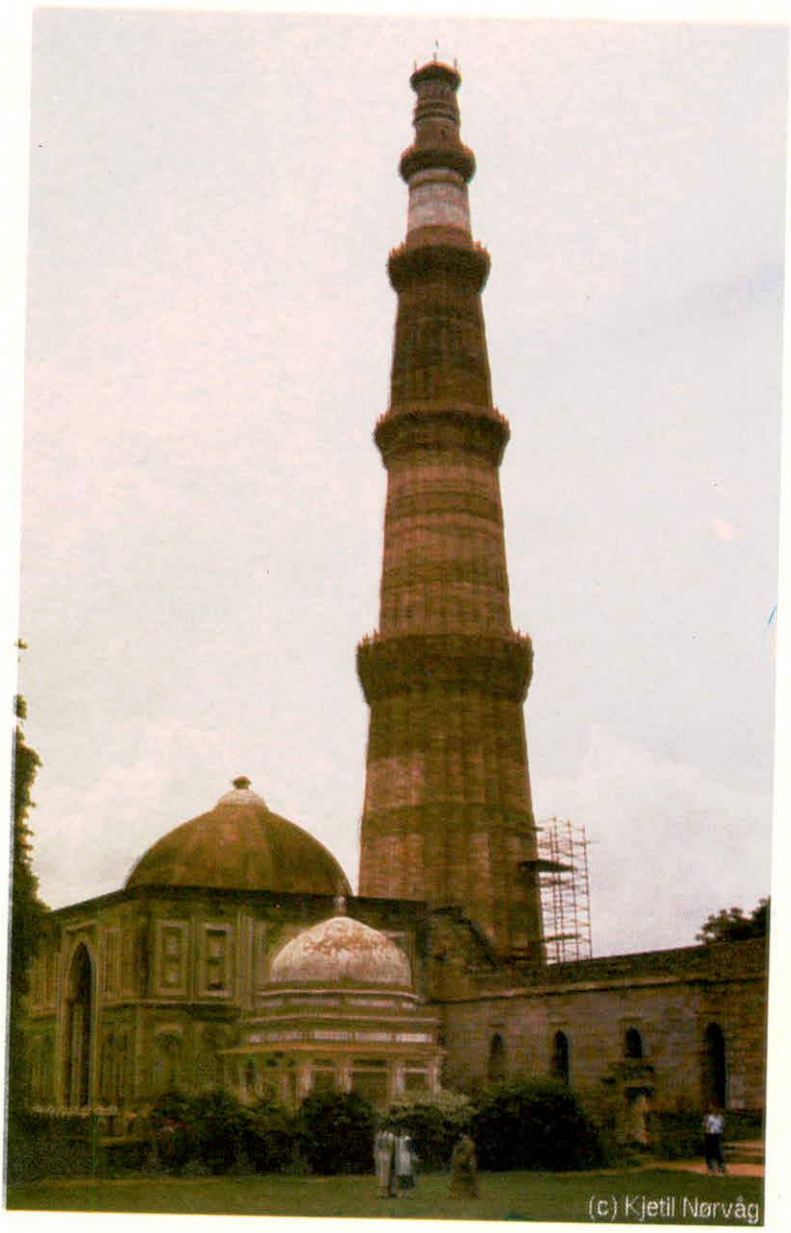

चित्र 15. कुतुब मीनार

गोर के मुहम्मद ने अपने पीछे कोई वंशज नही छोड़ा और अपने प्रतिनिधि कुतुब-उद्-दीन ऐबक को नायब नियुक्त किया। चूँकि कुतुब-उद्दीन ने अपना जीवन एक गुलाम के रूप में आरंभ किया था, अत इतिहासकार सामान्यतया उसके वंश का संदर्भ गुलाम वंश के रूप में देते हैं।

दक्षिण दिल्ली में स्थित कुतुब परिसर में बहुत-सी इमारतें हैं, जिनमें एक मस्जिद, एक विजय मीनार, एक मकबरा, एक मदरसा, एक विशाल प्रवेश मार्ग और आश्चर्यजनक प्रचीन लौह स्तंभ सम्मिलित हैं। कुतुब-उद्-दीन ऐबक ने पहली विशाल मस्जिद, एक विखंडित मंदिर के चबूतरे पर, हिंदू किले के अंदर बनाई। मस्जिद के प्रांगण में अभिलेखों सहित एक 1500 वर्ष पुराना लौह स्तंभ है। इस स्तंभ के विषय में सर्वाधिक आश्चर्यजनक तथ्य यह है कि लगभग 1500 वर्ष बाद भी धूप और बारिश के सहने के बावजूद इस स्तंभ पर जंग का एक भी निशान नहीं है। कुतुबउद्दीन ऐबक ने इस विशालकाय 72.5 मीटर ऊंची मीनार का निर्माण विजय मीनार के रूप में किया। कुतुब मीनार के नाम से प्रसिद्ध यह मीनार कुव्वतुल इस्लाम मस्जिद के निकट है। मूलतः इसकी चार मंजिलें थी। इस मिनार के शिखर का घेरा तीन मीटर है, जिस पर एक स्तंभयुक्त छतरी अवस्थितहै। 1368 में बिजली गिरने से मीनार के प्रभावित होने पर, फिरोजशाह तुगलक ने मरम्मत कराने के बाद दो ऊपरी गोलाकार मंजिलें बनवाई। शम्सुद्दीन ने 1229 ईसवी में, मूल मस्जिद के साथ एक अच्छादित मार्ग और नए मेहराबी आवरण जोड़कर कुव्वतुल इस्लाम मस्जिद के आकार को दूगुना किया। इल्तुतमिश के मकबरे के रूप में, मस्जिद के उत्तर–पश्चिम कोने के निकट एक वर्गाकार गुंबदयुक्त कक्ष बनवा कर जोड़ा गया है।

इस परिसर में अवस्थित सभी इमारतें अनेक गतिविधियों तथा व्यतीत सुनहरे काल की गवाही देती हैं।

देश की राजधानी नई दिल्ली रेलवे जंक्शन के साथ अच्छे सड़क मार्ग तथा वायुमार्ग से जुड़ी है।

8. भाखड़ा नांगल परियोजना

नदी घाटी विकास योजना के अंतर्गत स्वतंत्र भारत में सर्वप्रथम महत्वपूर्ण उपलब्धि भाखरा नांगल परियोजना है। उस समय में यह सबसे ऊंचा बांध भाखरा के पास सतलुज नदी पर बनाया गया जिसकी ऊँचाई 226 मीटर है तथा कंकरीट से निर्मित इस विशाल बांध की शीर्षस्थ लंबाई 518 मीटर की है। इस बांध से बने जलाशय का फैलाव 166 वर्ग कि.मी. क्षेत्र में है, जिसका नाम गोविंद सागर हैं।

भाखरा से नीचे सतलुज की धारा पर नांगल नामक स्थान पर 27 मीटर ऊँचा दूसरा बांध है। यहीं नहर सिचाई प्रणाली को नियंत्रित करने के लिए शीर्ष जल नियांमक (हेड रेगुलेटर) है। मुख्य नगर के साथ शाखा नहरों की कुल लंबाई 3300 कि.मी. से अधिक है जिनके द्वारा राजस्थान तक 15 लाख हेक्टेयर से अधिक भूमि की सिचाई होती है।

भाखरा नांगल परियोजना से सिचाई सुविधा के साथ-साथ यथेष्ट मात्रा में पन-बिजली का भी उत्पादन होता है। इसकी जल-विद्युत् उत्पादन की कुल क्षमता 1200 मेगावाट की है, जिसके लिए क्रमश भाखरा, नांगल, गंगवाल और कोहला में समवेत रूप में 16 विद्युत् उत्पादन इकाइयां स्थापित की गई हैं।

राष्ट्रीय स्तर पर भारत के विकास के प्रथम चरण के रूप में भाखरा नांगल परियाजना सबसे महत्वपूर्ण उपलब्धि है। इसके द्वारा पंजाब, हरियाणा तथा राजस्थान को काफी लाभ मिला है, और क्षेत्र में कृषि तथा औद्योगिक विकास से खुशहाली आई है। इस प्रकार भाखरा नांगल परियोजना विकास का तीर्थ कहलाने लगी है। अब यह पर्यटकों के लिए भी आकर्षण का केंद्र बन गई है, जो भारत में हुए विकास की आधुनिक प्रतीक हैं।

9. लोटस टेंपल (कमल मंदिर)

कमल मंदिर या लोटस टेंपल नई दिल्ली में निर्मित उपासना गृह सर्व धर्म समवाय का उत्तम प्रतीक है। मूल रूप से बहाई समुदाय का यह मंदिर सभी धर्मों के लोगों को प्रभु की प्रार्थना के लिए निमंत्रित करता है। इस मंदिर की आधार-शिला 21 अप्रैल 1980 को रखी गई तथा निर्माण पूरा होने के बाद 24 दिसंबर 1986 को उद्घाटन समारोह हुआ।

दक्षिणी दिल्ली में कालिकाजी मंदिर के निकट करीब एक हजार वर्ग मीटर के क्षेत्र में फैला सफेद संगमरमर से बनाया गया विशाल कमल पुष्प के रूप में दर्शनीय लोटस टेंपल वास्तव में आश्चर्यजनक है। वास्तुकला के साथ ही इसका निर्माण ज्यामितीय ढंग से किया गया है, जिसमें नौ (9) अंक को रचना का आधार माना गया है। फलस्वरूप कमल पुष्प की नौ पंखुड़ियों को सजाया गया है।

मंदिर परिसर में स्वच्छता तथा अनुशासन की सुव्यवस्था सराहनीय है, जो अन्य धार्मिक स्थलों में दुर्लभ है। इसी वजह से लोटस टेंपल की लोकप्रियता दिन प्रतिदिन बढ़ती जाती है।

वैज्ञानिक तथा तकनीकी शब्दावली आयोग के प्रकाशन

क. शब्दसंग्रह, शब्दावलियां व परिभाषा कोश

भौतिकी	
भौतिकी शब्द-संग्रह	119.00
अंतरिक्ष विज्ञान शब्दावली	45.00
इलेक्ट्रॉनिकी परिभाषा कोश	22.00
तरल यांत्रिकी परिभाषा कोश	10.00
भौतिकी परिभाषा कोश	700.00
गृह विज्ञान	
गृह विज्ञान शब्द-संग्रह	600.00
कंप्यूटर विज्ञान एवं सूचना प्रौद्यागिकी	
कंप्यूटर विज्ञान शब्दावली	57.00
कंप्यूटर विज्ञान परिभाषा कोश	102.00
सूचना प्रौद्योगिकी शब्द-संग्रह	231.00
रसायन	
रसायन शब्द-संग्रह	592.00
इस्पात एंव अलौह धातुकर्म शब्दावली	55.00
उच्चतर रसायन परिभाषा कोश	17.00
धातुकर्म परिभाषा कोश	278.00
रसायन (कार्बनिक) परिभाषा कोश	25.00

वाणिज्य	
वाणिज्य शब्दावली	259.00
पूंजी बाजार एंव संबद्ध शब्दावली	79.00
वाणिज्य परिभाषा कोश	24.00
रक्षा	
समेकित रक्षा शब्दावली	284.00
गुणता नियंत्रण	
गुणता नियंत्रण शब्दावली	38.00
भाषा विज्ञान	
भाषा विज्ञान शब्दावली (अंग्रेजी-हिदी तथा हिदी-अंग्रेजी)	113.00
भाषा विज्ञान परिभाषा (कोश खंड 1)	89.00
भाषा विज्ञान परिभाषा (कोश खंड 2)	59.00
जीव विज्ञान	
कोशिका जैविकी शब्द-संग्रह	62.00
पर्यावरण विज्ञान शब्द-संग्रह	381.00
प्राणि विज्ञान परिभाषा कोश	216.00
सूक्ष्म जैविकी परिभाषा कोश	45.00
कोशिका जैविकी परिभाषा कोश	121.00
लोक प्रशासन	
लोक प्रशासन शब्दावली	52.00
गणित	
गणित शब्द-संग्रह	143.00
गणित परिभाषा कोश	203.00
सांख्यिकी परिभाषा कोश	18.00
भूगोल	

भूगोल शब्द-संग्रह	200.00
भूगोल परिभाषा कोश	10.00
मानव भूगोल परिभाषा कोश	18.00
मानचित्र विज्ञान परिभाषा कोश	231.00
अनुप्रयुक्त विज्ञान	
प्राकृतिक विपदा शब्दावली	17.00
जलवायु विज्ञान शब्दावली	131.00
मनोविज्ञान	
मनोविज्ञान परिभाषा कोश	9.50
मनोविज्ञान शब्दावली	247.00
इतिहास	
इतिहास परिभाषा कोश	20.50
प्रशासन	
प्रशासन शब्दावली	20.00
प्रशासन शब्दावली (अंग्रेजी-हिंदी) प्रकाशनाधीन	20.00
शिक्षा	
शिक्षा परिभाषा कोश खंड-1	13.50
शिक्षा परिभाषा कोश खंड-2	99.00
आयुर्विज्ञान	
आयुर्विज्ञान परिभाषा कोश (शल्य विज्ञान)	338.00
आयुर्विज्ञान के सामान्य शब्द एंव वाक्यांश (अंग्रेजी-तमिल-हिंदी)	279.00
समाज शास्त्र	
समाज कार्य परिभाषा कोश	16.25
समाज-शास्त्र परिभाषा कोश	71.40
नृविज्ञान	

सांस्कृतिक नृविज्ञान परिभाषा कोश	24.00
बृहत् परिभाषिक शब्द-संग्रहः	
बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रहः विज्ञान, खंड 1	87.00
बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रहः विज्ञान खंड 2	87.00
बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह : विज्ञान (हिंदी-अंग्रेजी)	236.00
बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह : मानविकी और सामाजिक विज्ञान खंड 1,2	292.00
बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रहः मानविकी और सामाजिक विज्ञान (हिंदी-अंग्रेजी)	350.00
बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह : कृषि विज्ञान	278.00
बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह : आयुर्विज्ञान, भेषज विज्ञान, शारीरिक नृविज्ञान	239.00
बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह : आयुर्विज्ञान, कृषि एंव इंजीनियरी (हिंदी-अंग्रेजी)	48.50
बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह : मुद्रण इंजीनियरी	48.50
बृहत पारिभाषिक शब्द-संग्रह : इंजीनियरी (सिविल, विद्युत्, यांत्रिकी)	340.00
बृहत् पारिभाषिक शब्द संग्रह : पशु चिकित्सा विज्ञान	82.00
बृहत् पारिभाषिक शब्द-संग्रह : प्राणि विज्ञान	311.00
भू-विज्ञान	
भूविज्ञान शब्द-संग्रह	88.00
सामान्य भूविज्ञान शब्दावली	101.00
आर्थिक भूविज्ञान शब्दावली	75.00
भूभौतिकी शब्दावली	67.00
शैलयविज्ञान शब्दावली	82.00

खनिज विज्ञान शब्दावली	130.00
अनुप्रयुक्त भूविज्ञान शब्दावली	115.00
भूविज्ञान परिभाषा कोश	63.00
संरचनात्मक भूविज्ञान परिभाषा कोश	13.00
संरचनात्मक भूविज्ञान शब्दावली	73.00
शैल्यविज्ञान परिभाषा कोश	153.00
पेट्रोलियम प्रौद्योगिकी परिभाषा कोश	173.00
खनन एंव भूविज्ञान शब्द-संग्रह	32.00
संरचनात्मक भूविज्ञान एंव विवर्तनिकी शब्दसंग्रह	15.00
जीवाश्मविज्ञान शब्दावली	129.00
कृषि	
रेशम विज्ञान शब्द-संग्रह	50.00
कृषि कीटविज्ञान परिभाषा कोश	75.00
सूत्रकृमि विज्ञान परिभाषा कोश	125.00
मृदाविज्ञान परिभाषा कोश	77.00
इंजीनियरी	
रासायनिक इंजीनियरी शब्द-संग्रह	51.00
विद्युत् इंजीनियरी परिभाषा कोश	81.00
यांत्रिक इंजीनियरी परिभाषा कोश	94.00
सिविल इंजीनियरी परिभाषा कोश	10.00
वनस्पतिविज्ञान	
वनस्पतिविज्ञान शब्द-संग्रह	86.00
वनस्पतिविज्ञान परिभाषा कोश	75.00
पादप आनुवंशिकी परिभाषा कोश	75.00
पादपरोगविज्ञान परिभाषा कोश	75.00
पुरावनस्पति विज्ञान परिभाषा कोश	80.00
वानिकी शब्दसंग्रह	440.00

दर्शनशास्त्र

भारतीय दर्शन परिभाषा (कोश खंड 1)	151.00
भारतीय दर्शन परिभाषा (कोश खंड 2)	124.00
भारतीय दर्शन परिभाषा (कोश खंड 3)	136.00
दर्शन शास्त्र परिभाषा कोश	198.00

पुस्तकालय विज्ञान

पुस्तकालयविज्ञान परिभाषा कोश	49.00

पत्रकारिता

पत्रकारिता परिभाषा कोश	87.50
पत्रकारिता एंव मुद्रण शब्दावली	12.25

पुरातत्व विज्ञान

पुस्तकालय विज्ञान शब्दावली प्रकाशनाधीन	
पुरातत्वविज्ञान परिभाषा कोश	509.00

कला

पाश्चात्य संगीत परिभाषा कोश	343.00
प्रबंधविज्ञान परिभाषा कोश	170.00

अर्थशास्त्र

अर्थशास्त्र परिभाषा कोश	117.00
अर्थमिति परिभाषा कोश	17.65

अन्य

अंतर्राष्ट्रीय विधि परिभाषा कोश	344.00
नाट्यशास्त्र, फिल्म एंव टेलीविजन	
परिभाषा कोश	200.00
नाट्यशास्त्र, फिल्म एंव टेलीविजन शब्दावली	75.00

ख संदर्भ ग्रंथ

ऐतिहासिक नगर	195.00
प्राकृतिक एवं सांस्कृतिक नगर	109.00
समद्री यात्राएं	79.00
विश्व दर्शन	53.00
अपशिष्ट प्रबंधन	17.00
कोयला : एक परिचय	425.00
रत्न विज्ञान : एक परिचय	115.00
वाहितमल एवं आपंक : उपयोग एवं प्रबंधन	40.00
पर्यावरण प्रदूषण : नियंत्रण एवं प्रबंधन	23.00
भारत में गैस उत्पादन एवं प्रबंधन	540.00
भारत में ऊसर भूमि एवं फसलोत्पादन	559.00
2 दूरीक एंव 2 मानकित समष्टियों में	
संपात एंव स्थिर बिंदु समीकरणों के साधन	68.00
भारत में प्याज एंव लहसुन की खेती	82.00
पशुओं से मनुष्यों में होनेवाले रोग	60.00
ठोस पदार्थ यांत्रिकी	995.00
वैज्ञानिक शब्दावली: अनुवाद एंव मौलिक लेखन	34.00
मृदा-उर्वरता	410.00
ऊर्जा-संसाधन और संरक्षण	105.00
पशुओं के कवकीय रोग : उनका	
उपचार एंव नियंत्रण	93.00
पराज्यमितीय फलन	90.00
सामाजिक एंव प्रक्षेत्र वानिकी	54.00

विश्व के प्रमुख धर्म	118.00
पृथ्वी : उद्‌भव और विकास	470.00
पृथ्वी से पुरातत्व	40.00
इलेक्ट्रॉन सूक्ष्मदर्शी	90.00
द्रवचालित मशीन	66.50
मैग्नेसाइट : एक भूवैज्ञानिक अध्ययन	214.00
मृदा एंव पादप-पोषण	367.00
नलकूप एवं भौमजल अभियांत्रिकी	398.00
विश्व के प्रमुख धर्मों में धर्मसमभाव की अवधारणा : एक तुलनात्मक अध्ययन	490.00
समकालीन भरतीय दर्शन के कुछ मानववादी चिंतकः तुलनात्मक एंव समीक्षात्मक अध्ययन	153.00
पादपों में कीट प्रतिरोध और समेकित कीट प्रबंधन	367.00
स्वतंत्रता-पूर्व हिंदी में विज्ञान लेखन	176.00
भेड़ बकरियों के रोग एवं उनका नियंत्रण	343.00
भविष्य की आशा : हिंद महासागर	154.00
भारतीय कृषि का विकास	155.00
विकास मनोविज्ञान भाग-1	40.00
विकास मनोविज्ञान भाग-2	30.00
कृषिजन्य दुर्घटनाएं	25.00
इलेक्ट्रॉनिक मापन	31.00
वनस्पतिविज्ञान पाठमाला	16.00
इस्पात परिचय	146.00
जैव-प्रौद्‌योगिकी : अनुसंधान एंव विकास	134.00
विश्व के प्रमुख दार्शनिक	433.00

प्राकृतिक खेती	167.00
हिंदी विज्ञान पत्रिकारिता : कल, आज और कल	167.00
मानसून पवनः भारतीय जलवायु का आधार	112.36
हिंदी में स्वतंत्रता-परवर्ती विज्ञान लेखन	280.00

पत्रिकाएं (त्रैमासिक)

1. विज्ञान गरिमा सिंधु **2. ज्ञान गरिमा सिंधु**

सदस्यता शुल्क (उपर्युक्त दोनों के लिए अलग अलग)

प्रति अंक व्यक्तियों/संस्थानों के लिए	रु. 14.00	पौंड 1.64	डालर 4.84
वार्षिक चंदा	रु. 50.00	पौंड 5.83	डालर 18.00
प्रति अंक विद्‌यार्थियों के लिए	रु. 8.00	पौंड 0.93	डालर 10.80
वार्षिक चंदा	रु 30.00	पौंड 3.50	डालर 2.88

© भारत सरकार
नियंत्रक, प्रकाशन

पी. ई. डी.-908
800—2009 (डी. एस. के.-II)

मूल्य : देश में : रु. 335.00
विदेश में : $ 6.74
£ 4.63

प्रबन्धक, भारत सरकार मुद्रणालय, रिंग रोड़, मायापुरी, नई दिल्ली-110064 द्वारा मुद्रित
एवं प्रकाशन नियंत्रक, सिविल लाइन्स, दिल्ली-110054 द्वारा प्रकाशित।
2009